राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

राम पोथिनेनी की स्कंद का ट्रेलर...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

बुधवार, 30 अगस्त 2023 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्ष: 10 अंक: 250 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रुपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

यूपी ने अंधकार का लंबा दौर देखा

सीएम योगी बोलेः बीमारू राज्य से विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर उत्तर प्रदेश

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि उत्तर प्रदेश अंधकार के लंबे दौर से निकलकर श्बीमारूश राज्य कहे जाने वाले राज्य से विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर है। लखनऊ में फिक्की की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक को संबोधित करते हुए सीएम आदित्यनाथ ने यह भी दावा किया कि उत्तरी राज्य जल्द ही देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि 1985–86 के बाद उत्तर प्रदेश ने विकास के मामले में अंधकार का एक लंबा दौर देखा। उत्तर प्रदेश के बारे में देश और दुनिया की ध ाारणा बहुत अलग हो गई। प्रदेश में युवाओं, व्यापारियों और नागरिकों के सामने पहचान का संकट था। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में उत्तर प्रदेश अंधकार से बाहर निकलकर बीमारू राज्य से विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर है। सबसे पुराना उद्योग संगठन थ्ब्ब् लखनऊ में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की बैठक (छम्ब्ड) आयोजित कर रहा है। आदित्यनाथ ने अपने

संबोधन के दौरान कहा कि 38 साल बाद फिक्की अपनी राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की बैठक लखनऊ में कर रही है। मैं उत्तर प्रदेश की जनता की ओर से आप सभी का स्वागत करता हूं। यह मेरे लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है। उन्होंने यह भी कहा कि हमने उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक सभी बाध ाओं को दूर करने के लिए खुले दिल और खुले दिमाग से सुधार किए हैं। उन्होंने कहा कि उद्योगों को बढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक कम अपराध है, उन्होंने दावा किया कि आज संगठित अपराध शून्य पर हैं। यूपी सीएम ने कहा कि आज कोई किसी का अपहरण कर फिरौती नहीं मांग सकता और कोई अपनी मर्जी से किसी उद्योग को बंद नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि राज्य जल्द ही छठी नहीं बल्कि देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा और अगले पांच साल महत्वपूर्ण होंगे। सीएम योगी ने कहा, श्आने वाले वर्षों में यूपी देश की अग्रणी अर्थव्यवस्था बनेगी और देश के ग्रोथ इंजन के रूप में अपनी भूमिका निभाएगी।श्श उन्होंने कहा, श्कारोबार करने में आसानी के मामले में यूपी 14वें स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच गया।श्श

पीएम मोदी का उपहार, एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 200 रुपये की कटौती, उज्ज्वला लाभार्थियों को इतना मिलेगा लाभ

नई दिल्ली। केंद्र ने मंगलवार को एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 200 रुपये की कटौती करके लोगों को बहुत जरूरी राहत देने की घोषणा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में केंद्र सरकार ऐसे समय में इस फैसले पर पहुंची जब देश ओणम और

राखी का त्योहार मना रहा है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सभी उपभोक्ताओं के लिए घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 200 रुपये की कटौती का फैसला किया है.. .रक्षा बंधन के मौके पर देश की महिलाओं को यह पीएम नरेंद्र मोदी का तोहफा है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि एलपीजी सिलेंडर की कीमत में कटौती प्रध ानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों पर भी लागू होगी, जिन्हें पहले 200 रुपये की सब्सिडी मिलती थी। इसका मतलब है कि वे अब कुल 400 रुपये की कीमत में कटौती का लाभ उठा सकते हैं। केंद्र का यह कदम पांच राज्यों – राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और मणिपुर में चुनावों से ठीक पहले और अगले साल लोकसभा चुनावों से बमुश्किल नौ महीने पहले आया है। सिलेंडर की आसमान छूती कीमतों को लेकर विपक्ष सरकार को घेर रहा है। कांग्रेस नियमित रूप से एलपीजी सिलेंडर की कीमत पर 2014 में सत्ता में आने से पहले और बाद में भाजपा से उसके रुख पर सवाल उठाती है। मई 2016 में, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (एमओपीएनजी) ने एक प्रमुख योजना के रूप में श्प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजनाश (पीएमयूवाई) की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का प्राथमिक लक्ष्य ग्रामीण और वंचित परिवारों को स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन, विशेष रूप से एलपीजी तक पहुंच प्रदान करना था।

नीतीश के इनकार के बाद सामने आया मल्लिकार्जुन खड़गे का नाम, बनाए जा सकते हैं इंडिया के संयोजक

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता

मल्लिकार्जुन खड़गे को इंडिया गठबंधन के समन्वयक के रूप में आगे किया जा सकता है। मुंबई मीटिंग में उनके नाम का ऐलान किया जाएगा। सूत्रों का दावा है कि सभी पार्टी नेताओं ने खड़गे के नाम का समर्थन किया है। सूत्रों ने बताया कि जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) ने सुझाव दिया है कि कांग्रेस पार्टी के किसी व्यक्ति को इंडिया गठबंधन ब्लॉक के राष्ट्रीय संयोजक की भूमिका निभानी चाहिए। सूत्र ने कहा, जेडीयू ने यह सुझाव बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा इंडिया का राष्ट्रीय संयोजक बनने से इनकार करने के बाद दिया है।

31 अगस्त और 1 सितंबर को बैठकः इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक के रूप में नीतीश कुमार का नाम शिवसेना और इंडिया गठबंधन में शामिल कुछ अन्य दलों ने आगे बढ़ाया था। हालाँकि, जेडीयू ने कहा है कि ष्अधिमानतः मल्लिकार्जुन खड़गेष या कांग्रेस से किसी और को यह पद लेना चाहिए। यह घटनाक्रम मुंबई में इंडिया के दो दिवसीय सम्मेलन से पहले हुआ है। बैठक के दौरान विपक्षी गुट के राष्ट्रीय संयोजक और समन्वय समिति के 11 सदस्यों की नियुक्ति की संभावना है। भाजपा विरोधी गुट के प्रमुख नेता, जिसमें अब दो दर्जन से अधिक दल हैं, 31 अगस्त और 1 सितंबर को उपनगरीय मुंबई के एक लक्जरी होटल में एकत्र होंगे।

कुछ और दल होंगे शामिल

जून में पहली बार पटना में और बाद में जुलाई में बेंगलुरु में एक मंच पर एक साथ आने के बाद से यह उनका तीसरा सम्मेलन होगा। इससे पहले रविवार को, नीतीश कुमार ने कहा था कि मुंबई में आगामी बैठक के दौरान कुछ और राजनीतिक दलों के विपक्षी इंडिया गुट में शामिल होने की संभावना है। उन्होंने कहा कि हम मुंबई में आगामी बैठक के दौरान अगले साल के आम चुनावों के लिए इंडिया ब्लॉक की रणनीतियों पर चर्चा करेंगे। सीट–बंटवारे जैसे मुद्दों पर चर्चा की जाएगी और कई अन्य एजेंडों को अंतिम रूप दिया जाएगा। कुछ और राजनीतिक दल हमारे गठबंधन में शामिल होंगे।ष पीटीआई ने उनके हवाले से कहा।

फिर बोले नीतीश कुमार, कभी भी हो सकते हैं चुनाव, यह जरूरी नहीं है समय पर हों

पटना। 2024 चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज होती दिखाई दे रही है। एक ओर विपक्षी दलों का इंडिया गठबंधन है तो दूसरी ओर एनडीए गठबंधन है जिसका नेतृत्व भाजपा कर रही है। सबके अपने–अपने दावे हैं। इन सबके बीच बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बार फिर से 2024 चुनाव को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा है कि चुनाव कभी भी हो सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि समय पर ही हो। लगातार नीतीश कुमार इस बात की आशंका जता रहे हैं कि समय से पहले भी लोकसभा के चुनाव कराए जा सकते हैं। हालांकि, यह पहला मौका नहीं है जब नीतीश कुमार ने इस तरह की आशंका जताई है। इससे पहले कार्यक्रम में उन्होंने अधिकारियों से काम में तेजी लाने की बात कही थी और कहा था कि समय से पहले

चुनाव हो सकते हैं इसलिए विकास कामों में तेजी लाई जाए।

ममता ने भी किया था दावाः वहीं सोमवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी इस बात की संभावना जताई थी कि दिसंबर में लोकसभा के चुनाव हो सकते हैं। आपको बता दें कि नीतीश कुमार और ममता बनर्जी 26 विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं। नीतीश कुमार की ही कवायद पर इंडिया गठबंधन की शुरुआत हुई है। 31 और 1 सितंबर को इंडिया गठबंधन की तीसरी बैठक मुंबई में होने जा रही है। इस बैठक में कई बड़े निर्णय लिए जाएंगे। साथ ही साथ माना जा रहा है कि इंडिया गठबंधन की ओर से 1 लोगो भी लांच किया जा सकता है।

व्यक्तिगत इक्छा कुछ भी नहीं

पत्रकारों से बातचीत में नीतीश कुमार ने इस बात को भी दोहराया कि उनकी व्यक्तिगत इक्छा कुछ भी नहीं है। वह सब को एकजुट करना चाहते हैं। उनसे सवाल पूछा गया कि क्या उनकी कुछ और दलों से भी बातचीत हुई है? इस पर उन्होंने कहा कि अभी मैं इस बारे में कुछ भी नहीं बोल सकता। बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि तीसरी बैठक मुंबई में हो रही है, हम वहां जा रहे हैं। बिहार ने देश की जनता को दिशा दिखाने का काम किया है। जनता हमारे गठबंध ान के साथ खड़ी है।

मंच पर बज गया सुधा का फोन, वरुण गांधी ने ली चुटकी, कहा- बात करने दो, पता नहीं कब सीएम बन जाएं

नई दिल्ली। भाजपा के पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी अपने बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में बने रहते है। वरुण गांधी अपने क्षेत्र पीलीभीत के दौरे पर 28 अगस्त को पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने ऐसा बयान दिया है जो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया पर ध ाडल्ले से लोग इसे शेयर कर रहे है। वहीं वरुण गांधी के इस बयान के बाद कई तरह की चर्चाएं भी होने लगी है। दरअसल पीलीभीत के एक दिवसीय दौरे के दौरान वरुण गांधी ने एक जनसभा को संबोधित किया। इस

जनसभा के दौरान मंच पर मौजूद एक साधु का फोन बज गया। उनका फोन बजते ही मंच से मजाक करते हुए वरुण गांधी ने कहा कि, फोन मत काटिएगा। पता नहीं महाराज जी कब मुख्यमंत्री बन जाए, तो फिर हमारा क्या होगा। समय को समझो मुझे लगता है समय अच्छा आ रहा है। इस बयान से वरुण गांधी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी चुटकी ले ली है। उन्होंने अपनी ही सरकार पर फिर से हमला किया है। इस दौरे पर वरुण गांधी ने कहा कि पीलीभीत मेरा परिवार है। मेरी पहचान आप लोगों से है। मेरा सभी से निवेदन है कि किसी के लिए भी वोट करना मगर भेड़चाल में वोट मत करना। अपना दिमाग लगाकर वोट करना। सिर्फ इसलिए वोट मत दिना क्योंकि वो वोट मांगने आया था या भारत माता की जय और जय श्री राम बोला है तो वोट देदो।

नूंह हिंसाः 510 लोग गिरफ्तार, 130–140 FIR दर्ज, अनिल विज बोले– ये सब कांग्रेस ने किया है

नूंह । नूंह हिंसा पर हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने इसके लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया है। अपने बयान में अनिल विज ने कहा कि शुरुआती जांच में हमने लगभग 510 लोगों को गिरफ्तार किया है और 130–140 एफआईआर दर्ज की हैं। उनसे पूछताछ के बाद फिलहाल यही निष्कर्ष निकल रहा है कि ऐसा लग रहा है कि ये सब कांग्रेस ने किया है। विज ने दावा किया कि इसमें कांग्रेस के विधायक मम्मन खान को भी पुलिस ने 30 अगस्त को पूछताछ के लिए बुलाया है... मम्मन खान उन इलाकों का दौरा कर चुके हैं जहां हिंसा हुई थी। गृह मंत्री ने आगे कहा कि कई एंगल सामने आ रहे हैं। हम निष्पक्ष जांच कर

रहे हैं और हम उन लोगों को दिखाएंगे जो मास्टरमाइंड थे। इससे पहले हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने विधानसभा में कहा कि सरकार ष्लोकतांत्रिक और ध ार्मनिरपेक्ष है, जो सभी धर्मों के लोगों को उनकी मान्यताओं के आधार पर अपनी धार्मिक गतिविधियों का स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने की अनुमति देती है।ष उन्होंने कहा कि घटना की जारी जांच, साथ ही 500 लोगों की गिरफ्तारी, ष्संकेत देती है कि यह कांग्रेस द्वारा आयोजित किया गया था।ष विपक्ष के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर हुड्डा के अनुसार, इमारतों का विध वंस ष्न्यायालय में विचाराधीनष है। उन्होंने कहा, ष्हम विध्वंस पर चर्चा की मांग नहीं कर रहे हैं, हम नूंह हिंसा और इसके पीछे की साजिश पर चर्चा चाहते हैं।

इंडिया को एनडीए देगा जवाब, 31 अगस्त–1 सितंबर मुंबई में बैठक, लोकसभा चुनाव पर होगी चर्चा

नई दिल्ली। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ गठबंधन बीजेपी, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी गुट 31 अगस्त–1 सितंबर को 2024 के लोकसभा चुनाव से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वर्ली में एक बैठक आयोजित करेगा, जो मुंबई में विपक्षी आई.एन.डी.आई.ए. मोर्चे की सभा के साथ मेल खाएगा। बैठक में पार्टियों के सांसद, विधायक और एमएलसी शामिल होंगे और राज्य की सभी 48 लोकसभा सीटों पर चर्चा होगी। शिवसेना की ओर से मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, रामदास कदम, दादा भुसे और अन्य वरिष्ठ नेताओं के शामिल होने की संभावना है। भाजपा की ओर से उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस, राज्य प्रमुख चन्द्रशेखर बावनकुले और मुंबई पार्टी प्रमुख आशीष शेलार अन्य नेताओं में शामिल होंगे। बैठक में एनसीपी खेमे से अजित पवार, राज्यसभा सांसद प्रफुल्ल पटेल, प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे और अन्य वरिष्ठ नेता हिस्सा लेंगे। इस बीच, विपक्षी गुट के प्रमुख नेता, जिसमें 26 पार्टियां हैं, कई मुद्दों पर विचार–विमर्श करने और समूह के लोगो का अनावरण करने के लिए इस सप्ताह मुंबई में इकट्ठा होंगे।

प्रयागराज में छात्रा से छेड़छाड़ और भाई की हत्या के मामले में दो समुदायों के बीच तनाव

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में एक टीचर द्वारा अपने छात्र को पीटने को लेकर तुष्टिकरण की सियासत करने वालों ने दलों ने जिस तरह का कोहराम मचाया था, उनकी आवाज प्रयागराज में एक किशोरी के साथ छेड़छाड़ और इसका विरोध करने पर उसके चचेरे भाई की पीट पीटकर हत्या किए जाने के मामले में नहीं निकल रही है। क्योंकि यहां पीड़ित एक हिन्दू है और आरोपी मुस्लिम युवक हैं। घटना 28 अगस्त की है। प्रयागराज में स्कूल से वापस आ रही एक किशोरी के साथ वहीं के कुछ मुस्लिम युवक छेड़छाड़ करने लगे, इस पर लड़की के साथ जा रहा उसका चचेरा भाई छेड़खानी का विरोध करने लगा तो यह बात आरोपियों को इतनी बुरी लगी की उन्होंने किशोरी के चचेरे भाई को पीट–पीटकर मौत के घाट उतार दिया, लेकिन पुलिस मामले को रफादफा करने में लगी रही, इस पर ग्रामीण आग बबूला हो गए और पुलिस के खिलाफ विरोध पर उतर आये। आज भी पुलिस की लापरवाही के चलते ग्रामीणों का गुस्सा

शांत होते नहीं दिख रहा है,उत्तेजित महिलाएं लाठी, डंडा लेकर खीरी थाने पहुंच गईं। आक्रोशित भीड़ आरोपित ग्राम प्रधान मोहम्मद यूसुफ और मोहसिन सहित अन्य के घरों पर बुलडोजर चलाने की मांग कर रही है,इस घटना के चलते इलाके में तनाव व्याप्त है। पुलिस अभी तक आरोपितों की तलाश में जुटी हुई है। पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा सहित कई अधिकारी खीरी में डेरा डाले हुए हैं। गौरतलब हो खीरी के पुरादत्तू गांव निवासी एक छात्रा सोमवार शाम चचेरे भाई के साथ स्कूल से लौट रही तभी उससे छेड़खानी की गई। चचेरे भाई ने जब विरोध किया तो दूसरे समुदाय के कुछ लड़कों ने उसे पीट–पीटकर मौत के घाट उतार दिया, जबकि पुलिस ने मौके से किशोर को घायल बताते हुए हटा दिया जिससे घरवालों के साथ ही ग्रामीण नाराज हो गए और खीरी चौराहे पर चक्का जाम कर दिया था। उधर खबर पाकर खीरी थानाध यक्ष नवीन सिंह फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और किशोर को घायल बताते हुए अस्पताल ले जाने की बात कही, मगर रास्ते में उसकी सांस थम गई। इसका पता चलते ही किशोर के घरवाले और ग्रामीण आक्रोशित हो गए। वह किशोर के शव को वापस लाए जाने की मांग को लेकर खीरी चौराहे पर चक्का जाम लगा दिया।

छात्रा ने दूसरे समुदाय के चार लड़कों पर छेड़खानी और हत्या का आरोप लगाया है। दो आरोपित किशोर के ही स्कूल में पढ़ते हैं। हालांकि, पुलिस छेड़खानी की बात से इनकार कर रही है। देर रात पीड़ित परिवार तहरीर पर ग्राम प्रधान मोहम्मद यूसुफ व मोहसिन और दो अज्ञात के खिलाफ हत्या, छेड़छाड़ समेत कई धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था।

कोटेदारों ने सौपा जिलाधिकारी को ज्ञापन

विभागीय उत्पीड़न से परेशान कोटेदार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बस्ती। आदर्श कोटेदार एवं उपभोक्ता वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष विनोद भाई के नेतृत्व में कोटेदारों ने जिलाधिकारी को मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से बताया कि कोरोनाकाल मे प्रदेश के कोटेदारों ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना व राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत खाद्यान्न एवं चना नमक रिफाइण्ड तल आदि का 88 प्रतिशत कोटेदारी ने इमानदारी से वितरण अपने व अपने परिवार के जीवन की परवाह किये बिना उत्तर प्रदेश सरकार के दिशा निर्देशन में किया है। जिसमें प्रदेश में कुछ कोटेदारों की कोरोना से मृत्यु भी हो गयी. परन्तु उन्हें किसी प्राकर की सरकारी सहायता भी नहीं प्राप्त कराई गई।उत्तर प्रदेश से नीचे स्थान प्राप्त करने वाले राज्यों गुजरात, उत्तराखण्ड हरियाणा में जहां रू0 150/–प्रति कुनाल से 300/–प्रति कुन्तल लाभांश प्राप्त हो रहा है।तो वही प्रदेश में

प्रति कुनाल अभी माह अगस्त 2023 में ही कर दिया है। जबकि उत्तर प्रदेश के कोटेदारों को अभी भी मात्र 90/– प्रति कुन्तल लाभाश प्राप्त हो रहा है। जिन दुकानों पर मात्र 1000 यूनिट के ही राशन कार्ड हैं उन कोटेदारों को केवल रू0 4500/–ही प्रतिमाह लाभांश के रूप में प्राप्त होता है। इतने रूपये में परिवार का पालन पोषण समय नहीं हो सकता है। उन्होंने बताया कि 20 सितम्बर से कोटेदार/उपभोक्ता जनजागरण रथयात्रा निकाली जाएगी हम लोगो ने आज पांच सूत्रीय माग पत्र देकर दिया जिसमें कोटेदारों को खाद्यान्न एवं चीनी पर 300 रुपये प्रति कुन्तल लाभांश दिया जाए एवं 10 लाख रूपये का स्वास्थ्य बीमा कवर दिया जाए। वर्ष 2001 से बकाया एपीएल, बीपीएल अत्योदय एमडीएम, आगनबाडी आदि का बकाया एवं परिवहन व्यय का भुगतान पूर्व में जारी शासनादेश दिनांक 5–7–2014 के अनुपालन में उ०प्र० राज्य खाद्य वस्तु निगम के द्वारा कराया जाए। उ0प्र0 सरकार द्वारा जारी शासनादेश के अनुपालन में परिवहन ठेकेदारों द्वारा कोटेदारों की अधिकतम दुकानों तक खाद्यान्न नहीं पहुंचाया जा रहा है। 05 से 07 कि०मी० की दूरी पर परिवहन ठेकेदारों द्वारा धर्मकांटे पर दिया जा रहा है। जिसे कोटेदार अपने व्यय पर दुकान तक ले जा रहा है। जिसका शासन द्वारा संज्ञान लेकर जनहित में कोटेदार की दुकान तक पहुंचाया जाए।ई–पास मशीने कोटेदारों को किस शर्त पर दी गयी वह आदेश कोटेदारों को उपलब्ध कराया जाए जिससे कम्पनियों के इंजीनियरों द्वारा किये जा रहे सिमकार्ड रिचार्ज, एवं मशीनों की मरम्मत की सुविधा आदि की समस्याओं के नाम पर कोटेदारों का आर्थिक व मानसिक शोषण का जनहित में बचाव कराया जा सके। साथ ही आपूर्ति कार्यालय में प्राइवेट दलालो का बोल बाला है जो कोटेदारों का मानसिक व आर्थिक शोषण कर रहे हैं। इस दौरान सरवर अली, मीना कुमारी, तेजनारायण, हरीराम, अनेक कुमार, अब्दुल ख़ालिद, रामगोपाल चौधरी, शिवसहाय, कमला सिंह, रवि वर्मा, लालजी, पवन कुमार ,रॉव कान्त, हरेन्द्र कुमार चौधरी, मनोज, विनोद कुमार, दिवाक्य, सरजू यादव, राम.पाल, निया याज अहमद, अरुण कुमार, अरुलाल यादव, अंगद यादव, वीरेन्द्र शुक (रामचन्द्र), .ष्ण कुमार, रजावली, राजा का सन्नी, देवीप्रसाद गुप्ता, राधेश्याम, परशुराम, दिनेश कुमार, अनुज मुक आदि।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर कबड्डी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

पुलिस कर रही है महिलाओं व बालिकाओं को जागरूक: शाइस्ता

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज,सिद्धार्थनगर। मंगलवार को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय डुमरियागंज में कबड्डी खेल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला थाना डुमरियागंज की प्रभारी शाइस्ता ने फीता काटकर व बालिकाओं से हाथ मिलाकर किया। इसके उपरान्त सभी बालिका खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। महिला थाना प्रभारी एवं उनके हमराही सोनी मैडम,धर्मनाथ ने खेल समापन तक खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया और अंत मे सभी को शुभकामना एवं आशीर्वाद दिया।सभी

बच्चो ने बहुत ही उत्साह से खेल में प्रतिभाग कर प्रदर्शन किया जिसमे कल्पना चावला टीम विजयी और रानी लक्ष्मीबाई टीम उपविजेता रही। समापन अवसर पर महिला थाना प्रभारी शाइस्ता ने कहा कि खेलों से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है ऐसे में बिना किसी भेदभाव के खेलों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिला जागरूकता अभियान के तहत महिलाओं व बालिकाओं को जागरूक किया जा रहा है। स्कूलों व विद्यालयों में पुलिस सहायता एवं हेल्प डेस्क नंबर के बारे में जानकारी दी जा रही है। जिसका उपयोग अपनी आवश्यकता अनुसार बालिकाएं अवश्य करें। विद्यालय में खेल शिक्षक संतोष सिंघानियां के नेतृत्व में कबड्डी खेल का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रीति,दिलकश जहां, अनीता ,प्रीति गुप्ता,अमित सिंह,काजी तालिब आदि लोग मौजूद रहे।

उद्यान मंत्री ने किया बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण

मंत्री ने वितरित की राहत सामग्री किट

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोंडा। मंगलवार को उद्यान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने तरबगंज के बाढ़ ग्रस्त गांव दुर्गापुर का निरीक्षण किया और वहां मौजूद लोगों से बात की। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों को तत्काल मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराने का आदेश अधिकारियों को दिया। इसके बाद उन्होंने बाढ़ प्रभावित लोगो को राहत सामग्री किट भी वितरित की। इसके बाद उन्होंने तरबगंज तहसील के सभागार में प्रशासनिक अधिकारियों एवं सिंचाई विभाग के अधिकारी के साथ बाढ़ संबंधी समीक्षा बैठक की। बैठक में उन्होंने एसडीएम तरबगंज से तहसील के बाढ़ प्रभावित 24 गांवों के बारे में मुहैया कराई जा रही सुविधाओं व राहत कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारी को निर्देश दिये कि बाढ़ प्रभावित गांवों का निरन्तर निरीक्षण करते रहे और पीड़ित लोगों के बीच राहत सामग्री का वितरण किया जाए। बाढ़ प्रभावित लोगों को पेयजल, राशन, दवा, पशुओं के लिए चारा आदि की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। साथ ही कहा कि सभी सम्बन्धित अधिकारी अपनी जिम्मेदारियां को भली–भांति समझे, मुख्यमंत्री जी का स्पष्ट निर्देश है की बाढ़ से प्रभावित होने वाले परिवारों और व्यक्तियों को पूरी सुविधा मुहैया कराई जाए। अतः सभी संबंधित अधिकारीगण अपने विभागों से होने वाले राहत कार्यों को पीड़ित लोगों तक पहुंचाएं। उन्होंने सभी अधिकारियों को सह निर्देश दिए की बाढ़ रहकर में किसी प्रकार की लापरवाही ना बढ़ती है साथ ही बाढ़ बढ़ने पर इस तरह की तैयारी रखी जाए कि गांव वालों को ऊंची जगह पर स्थानांतरित किया जा सके। उच्च स्थान पर गांव वालों को एकत्रित कर वहां पर एक साथ सभी को राहत सामग्री वितरित करने की सुविधा बनाई जाये। बैठक के दौरान अपर जिलाधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, उपजिलाधिकारी तरबगंज, एक्सीएन सिंचाई, जिला पूर्ति अधिकारी, जिला .षि अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला आपदा विशेषज्ञ सहित अन्य सभी संबंधित विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य विभाग एक बार फिर सुर्खियों में

सरकार के सख्त निर्देश के बावजूद भी भ्रष्टाचारियों पर नहीं किसी का डर

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोण्डा। सदर तहसील क्षेत्र से रुपये लेते हुए वीडियो सामने आया है। इस अवैध वसूली का

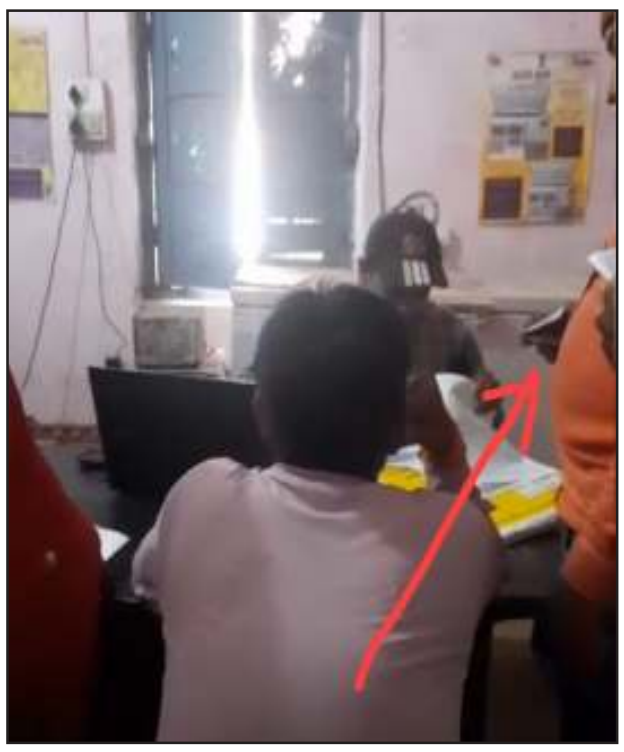

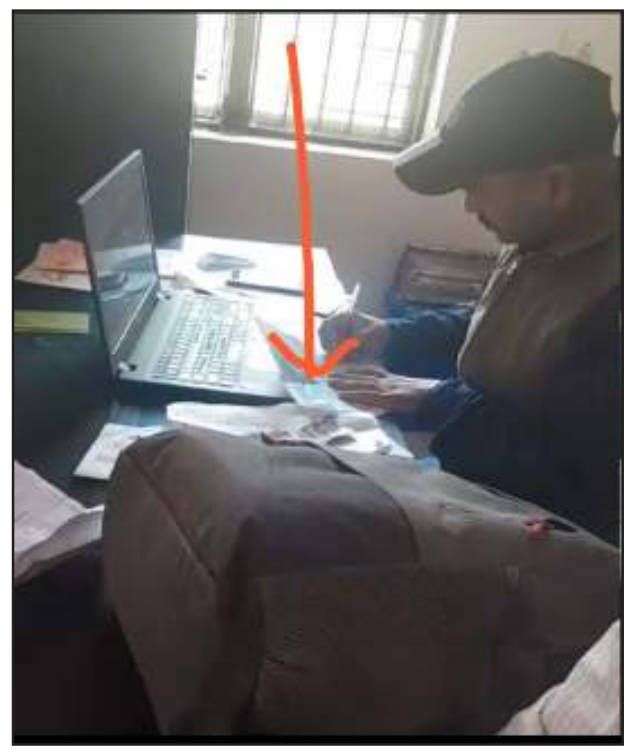

रूप से वसूली की जा रही है। इस अवैध वसूली का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें कंप्यूटर ऑपरेटर जन्म प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर एक महिला से रूपये लेकर जेब में रखते हुए नजर आ रहा है वही दूसरे वीडियो में कोई पुरुष आपरेटर को रुपये देते हुए नज़र आ रहा हैं। बहरहाल वीडियो वायरल होने के बाद खरगूपुर सीएचसी अधीक्षक ने बताया कि इस प्रकरण में जो जानकारी हुई है उसके मुताबिक टीम गठित कर दी गई है जांच की जाएगी जो दोषी होगा उस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। अधीक्षक ने कहा कि जन्म प्रमाण पत्र निरूशुल्क बनाया जाता है इसके लिए किसी को पैसा देने की जरूरत नही है। सीएमओ डॉ रश्मि वर्मा से संपर्क किया गया तो मीटिंग में होने के कारण इस संबंध में जानकारी नहीं हो सकीं। के अन्तर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर जन्म प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर अवैध वसूली जमकर की जा रही है। इसी क्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रूपईडीह खरगूपुर में जन्म प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर कंप्यूटर ऑपरेटर का महिला से रुपए लेकर जेब में रखते हुए वीडियो तथा दूसरे वीडियो में किसी पुरुष वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद स्वास्थ्य विभाग में हड़कम्प मचा हुआ है। बता दें कि मामला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खरगूपुर रूपईडीह से जुड़ा है। जहाँ जन्म प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर तैनात अनुराग तिवारी द्वारा अवैध

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में घटिया सामग्री आपूर्ति, मनमानी का आरोप

भाजपा नेता ने डीएम से किया उच्च स्तरीय जांच, कार्रवाई की मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी नरेन्द्र मोदी विचार मंच के जिला मंत्री रितेश पाल ने जिलाधिकारी को पत्र भेजकर बस्ती जनपद में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में वित्तीय वर्ष 2022–23 की अवधि में किये गये खाद्यान्न सामग्री व दैनिक उपयोग तथा स्टेशनरी की गुणवत्ता विहीन सप्लाई की कमेटी बनाकर जांच कराने, दोषियों पर कार्रवाई एवं वर्तमान सत्र 2023–24 की जेम पोर्टल के माध्यम से टेण्डर प्रक्रिया फाइनल कराने का आग्रह किया है। भेजे पत्र में रितेश पाल ने कहा है कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में एक वित्तीय वर्ष की अवधि के लिए खाद्यान्न सामग्री व दैनिक उपयोग तथा स्टेशनरी के सप्लाई के लिए निदेशक बेसिक शिक्षा के आदेशानुसार जेम पोर्टल पर बिड प्रकाशित कराया जाता है, इसमें इच्छुक संस्था द्वारा प्रतिभाग किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2022–23 में जिस फर्म को सप्लाई का वर्क आर्डर किया गया उसके द्वारा विद्यालयों में गुणवत्ता विहीन सामग्री की आपूर्ति की गयी। टेण्डर प्रक्रिया में कान्वेन्ट एवं क्लासमेट कम्पनी 200 पेज की कापी की सप्लाई के लिए आदेशित किया गया परन्तु फर्म द्वारा खराब कागज की लोकल कम्पनी की 166 पेज की कापी विद्यालयों में सप्लाई की गयी। इसके अतिरिक्त अन्य सामग्री अनुबन्ध के अनुसार विद्यालयों में उपलब्ध नही करायी गयी। पत्र में कहा गया है कि विभागीय कर्मचारियों की मिलीभगत से बड़े पैमाने पर सरकारी धन का दुरूपयोग किया गया है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में वर्ष 2023–24 में जिलाधिकारी द्वारा इस साल अप्रैल से लेकर जून 2023 तक कुल 90 दिनों के अन्दर टेण्डर प्रक्रिया जैम पोर्टल के माध्यम से कराने हेतु निर्देशित किया गया। जिसके कम में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बस्ती द्वारा 16 जून 2023 को जेम पोर्टल पर इच्छुक संस्था द्वारा विड डालने हेतु आमंत्रित किया गया। विड सम्बन्ध में संस्था द्वारा टेण्डर डाला गया किन्तु विगत साल की चयनित चहेती संस्था को अनैतिक लाभ देने के लिए 2 माह से अधिक समय बीत जाने के बाद भी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बस्ती द्वारा टेण्डर को फाइनल नही किया गया है। विभाग द्वारा फाइनेशियल विड नही खोला जा रहा है वर्तमान संस्था द्वारा टेण्डर में निर्धारित सामग्री विद्यालयों में नहीं दिया जाता है जो भी सामग्री दी जाती है वह गुणवत्ता विहीन होती है। इस सम्बन्ध में तत्कालीन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बस्ती द्वारा संस्था को नोटिस भी दिया गया इसके साथ साथ बिना टेण्डर फाइनल किये बिना ही एवं जिलाधिकारी से बिना अनुमति लिये ही उसी संस्था से प्रत्येक कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में 2023–24 के अन्तर्गत 5900 कापी, पेंसिल, पेन, आदि सप्लाई करा दी गयी। इस प्रकार जिस संस्था को बाद में टेण्डर मिलेगा उसके अधिकारों का नियम विरूद्ध तरीके से हनन किया गया है। विभाग द्वारा बालिकाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। उन्होने मांग किया है कि इस प्रकार की गम्भीर प्रकरण की जाँच कमेटी बनाकर जाँच कराने एवं इस .त्य में दोषी अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही कराया जाय।

प्रसाशनिक कार्य के लिये सरकारी भूमि तलाश रहे ग्राम विकास अधिकारी

ग्राम पंचायत की सार्वजनिक भूमियों पर हो रहे अवैध कब्जा को रोक पाने में समर्थ दिख रहे है हल्का लेखपाल

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शोहरतगढ़,सिद्धार्थनगर। भले ही प्रदेश सरकार के जिम्मेदार अधिकारी सार्वजनिक संपत्तियों यानी ग्राम समाज की भूमियों पर हो रहे अवैध कब्जे को लेकर सजग और सतर्क रहें, किन्तु लाख प्रयास के बाद भी शोहरतगढ़ तहसील क्षेत्र के कुछ ग्राम पंचायत के हालात ऐसे हैं कि वहां प्रशासनिक कार्य हेतु भूमि नहीं मिल रहा है और खुद ग्राम पंचायत सचिव को अधिकारियों से फरियाद करनी पड़ रही है, जबकि नवीन परती और बंजर भूमि के रूप में कई बीघे जमीनें खतौनी दिख रही है। मामला शोहरतगढ़ तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत बगुलहवा और डोहरिया बुजुर्ग का है। ग्राम विकास अधिकारी लालचन्द चौधरी ने एसडीएम को संबोधित प्रार्थना पत्र में लिखा है कि शासन के निर्देश के क्रम में प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत भवन एवं सामुदायिक शौचालय का निर्माण करना अति आवश्यक है, लेकिन सरकारी जमीन न मिलने के कारण मेरे प्रभार के ग्राम पंचायत बगुलहवा में पंचायत भवन एवं सामुदायिक शौचालय का निर्माण व ग्राम पंचायत डोरिया बुजुर्ग में सामुदायिक शौचालय निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका है। उन्होंने यह भी लिखा है कि उक्त 2 ग्राम पंचायत में सरकारी जमीन चिन्हित करने एवं कब्जा दिलाने के लिए हल्का लेखपाल को आदेश देने की .पा करें। जानकारों की माने तो ग्राम पंचायत बगुलहवा में राजस्व ग्राम सार्वजनिक संपत्ति रजिस्टर में खाता संख्या 327 में नवीन परती के रूप में 0.2500 हे० और 328 बंजर के रूप में 0.1170 हे० भूमि दर्ज है। जबकि खलिहान के रूप में 340 पर .4930 हेक्टेयर भूमि अंकित है। तो वही डोहरिया बुजुर्ग खाता संख्या 242 अतिरिक्त भूमि के नाम से 1.2920 हे० और 243 नवीन परती के रूप में 0.5220 हेक्टेयर भूमि अंकित है व 244 बंजर के रूप में 0.2880 दर्ज है। अब सवाल यह है कि प्रश्नगत ग्राम पंचायत की सार्वजनिक भूमियों पर क्या किसी प्रकार का कब्जा है। या जो अभिलेख में भूमि अंकित की गई है उसे पर किसी की नज़र है। यह तो जांच के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा... यदि सरकारी भूमियों पर कब्जा है तो संबंधित लेखपाल की कार्यशैली पर भी सवाल उठने लाजिम है। उक्त के संदर्भ में हल्का लेखपाल रजनीश से बात की गई तो उन्होंने कहा कि पुरानी मानक के हिसाब से जमीन नही है, नई मानक यदि है तो उसके हिसाब से कार्य किया जाएगा। तो वही उप जिलाधिकारी प्रदीप कुमार यादव ने बताया कि सचिव महोदय का प्रार्थना पत्र मिला है निश्चित तौर पर जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती पर मनाए जाने वाले राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर ग्राम

पंचायत इमलिया कोडर,पचपेड़वा में अवस्थित ग्रामीण स्टेडियम में तीरंदाजी खेल का शुभारंभ जिला युवा कल्याण अधिकारी प्रदीप कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया। युवक और महिला मंगल दलों के माध्यम से एक दिवसीय बैडमिंटन टूर्नामेंट का भी आयोजन स्टेडियम में किया गया। युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल द्वारा उक्त कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला युवा कल्याण अधिकारी प्रदीप कुमार त्रिपाठी,क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी ज्ञान बाबू तिवारी,क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी शक्ति मिश्रा और पी.आर.डी जवान चंद्र प्रकाश, सहदेव, मुन्ना लाल, प्रेम प्रकाश, गंगाराम, मनीराम, शिव नाथ और मंगल दल अध्यक्ष चंदनपुर राजेंद्र प्रसाद आदि उपस्थित रहे। जिला युवा कल्याण अधिकारी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल से व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक दोनों विकास होता है।

जिलाधिकारी ने किया सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। सड़क सुरक्षा समिति की बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन ने यातायात नियमों की जानकारी जनता को दिये जाने के सम्बन्ध में कैम्प लगाकर दिये जाने का निर्देश दिया गया। विद्यालय के वाहनो के फिटनेस की जांच कराने का निर्देष दिया गया। बिना परमिट के चल रहे वाहनों पर कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया। सभी वाहनों पर विशेष रूप से ट्राली पर रेडियम जरूर लगवा दे। जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यतः सड़क दुर्घटना लापरवाही के कारण होती है। ओवर लोडिंग गाड़ियों नही चलनी चाहिए। जिलाधिकारी ने सड़को पर सफेद पट्टी और स्पीड ब्रेकर पर भी सफेद पट्टी लगवाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने उपस्थित समस्त अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्यक लगाये, तीन सवारी न चले, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें। जनपद में अधिक दुर्घटना वाले स्थलो को चिन्हित कर वहां पर संकेत बोर्ड आदि लगवाने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने क्षेत्राधिकारी को निर्देष देते हुए कहा कि सड़क के किनारे अतिक्रमण एवं सड़क के किनारे/ढाबो के किनारे भारी वाहन हटवाने का निर्देष दिया। एन.एच. से लिंक रोड पर संकेताक बोर्ड लगवाने का निर्देष दिया गया। इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त एआरटीओ सुरेष कुमार मौर्य, जिला अधिशासी अभिन्ता लो0नि0वि0 (प्र0ख0) जितेन्द्र सिंह, अधिशासी अभियन्ता एन.एच. इन्डो नेपाल बार्डर, आर0ई0डी0, तथा अन्य संबधित अधिकारी उपस्थिति रही।

जिलाधिकारी संजीव रंजन ने किया जिला स्तरीय उद्योग बन्धु की समीक्षा बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। जिला स्तरीय उद्योग बन्धु, व्यापार बन्धु एवं श्रम बन्धु की समीक्षा बैठक जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन द्वारा पिछली बैठक की कार्यवृत्ति की समीक्षा की गयी। जिन लोगो द्वारा एम0ओ0 यू0 हस्ताक्षर किये गये है उनसे सम्पर्क करके उनकी समस्याओं का समाधान कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने व्यापारियों की समस्याओं को सुना तथा सम्बन्धित अधिकारियों को उसके निस्तारण हेतु निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को रोजगार सृजन योजना हेतु शासन से प्राप्त लक्ष्य को पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने उपस्थित व्यापारियों से कहा कि ऋण से संबधित आवेदन कर बैंको को उपलब्ध करा दे जिससे बैंको द्वारा स्वीकृत कराया जा सके। जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को निर्देश दिया कि जो उद्योग लगाने के लिए व्यापारी आ रहे उनका प्रस्ताव बनाकर भेजे। अधिकारियों द्वारा व्यापारियों की समस्याओं का समय से समाधान करने के लिए जिलाधिकारी तथा जिला प्रशासन की व्यापारियों द्वारा प्रशंसा की गयी। श्रमिको का पंजीयन एवं नवीनीकरण कराने का निर्देष दिया गया। समस्त कार्यदायी संस्थाओ में पंजीकृत श्रमिको का सेस कटौती का भुगतान कराये जाने का निर्देष दिया गया। श्रम विभाग के कार्यदायी संस्था का साइड रजिस्ट्रेषन कराने का निर्देष दिया। जिलाधिकारी ने अधिषासी अभियन्ता जल निगम को निर्देष दिया कि जहां तक कार्य पूर्ण हो गया है वहॉ पानी की सप्लाई षुरू करा दे। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त उपायुक्त उद्योग दयाशंकर सरोज, अधिषासी अभियन्ता विद्युत बांसी, अधिषासी अधिकारी नगर पंचायत कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, वरिष्ठ निरीक्षक बाट–माप, अधिषासी अभियन्ता लो0नि0वि0 (प्रा0ख0) जितेन्द्र सिंह, अन्य सम्बंधित अधिकारी तथा व्यापारियों आदि की उपस्थित रही।

उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायत अधिकारी संघ ने किया बैठक,जिलाधिकारी से किया मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। मंगलवार को उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायत अधिकारी संघ के पदाधिकारी ने बैठक कर आ रही समस्याओं को लेकर विचार विमर्श किया। बैठक में जिलाधिकारी सिद्धार्थ नगर से मांग करते हुए उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायत अधिकारी संघ के अध्यक्ष आशुतोष यादव एवं जिला मंत्री अभिनव ओझा ने सचिव का स्थानांतरण एक ब्लॉक से दूसरे ब्लॉक में बिना कलस्टर आवंटन के किए जाने पर गहरी नाराजगी व्यक्त की, उन्होंने मांग किया कि बिना सचिव का पक्ष लिए उसके कलस्टर का परिवर्तन किसी राजनीतिक दबाव में ना किया जाए, ग्राम पंचायत में ग्राम निधि के कार्यों हेतु नियुक्त कंसलटेंटो का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाए जिससे वित्तीय अनियमिताओं से बचा जा सके, बिना तकनीकी रिपोर्ट के जर्जर एंव ध्वस्तिकरण योग सरकारी भवनों ,आंगनबाड़ी

केन्द्रो के मरम्मत के लिए अनावश्यक दबाव न बनाया जाए, प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री आवास हेतु पात्रता की शर्तें सहज एंव स्पष्ट किया जाए जिससे किसी प्रकार का कोई विवाद उत्पन्न ना हो, सरकारी भवनों योजनाओं के लिए आवश्यक भूमि जो कि राजस्व विभाग द्वारा ही चिनांहाकन संभव है के लिए सचिवों पर अनावश्यक दबाव न बनाया जाए, साथ ही महिला सचिवों को गौशाला वाले क्लस्टर मे नियुक्ति ना किया जाए, मनरेगा योजना में शासनादेश में निहित 60:40 का अनुपालन स्वी.त या भुगतान आवश्यक किया जाए, ग्राम पंचायत अधिकारी ओम प्रकाश पंकज को तत्काल बहाल किया जाए, एसीपी योग कर्मचारियों को तत्काल इसका लाभ दिया जाए, अनावश्यक कर्मचारियों का वेतन बद्धित ना किया जाए, इन सभी मांगों को मांगते हुए उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायत अधिकारी संघ ने जिलाधिकारी से ज्ञापन के माध्यम से अपनी बात रखी । आपको बता दें कि आए दिन ग्राम पंचायत अधिकारियों को बिना बताए ही जांच बैठा दिए जाता हैं जिस कारण ग्राम पंचायत अधिकारी सही से कम नहीं कर पाते हैं बहुत सारी जगह पर प्रधान की मनमानी के चलते भी ग्राम पंचायत अधिकारियों पर अनावश्यक रूप से प्रशासन दबाव डालता रहता है लेकिन प्रधान के कारण व काम नहीं हो पाते हैं इस बैठक में मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष आशुतोष यादव, जिला मंत्री अभिनव ओझा, संरक्षक आशुतोष मिश्रा,संरक्षक हरिशंकर सिंह, राजेश चौधरी ,प्रदीप सिंह ,अखिलेश यादव ,अंकित तिवारी, हरिराम चौधरी,रवी कपूर राव, दिलीप पटेल, कुंवर कनौजिया, रविकांत यादव ,विकास चौधरी, संजय ,मोहम्मद मुस्तफा, प्रियंका गोस्वामी ,महेश्वर पांडे,निशा श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

अटेवा ने सांसद के द्वार घंटी बजाकर मांगी पुरानी पेंशन

पुरानी पेंशन के लिए अटेवा ने सौंपा ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। अटेवा पेंशन बहाली मंच द्वारा पूरे देश में पुरानी

पेंशन बहाली हेतु सांसदों के द्वार घंटी बजाओ अभियान के क्रम में मंगलवार को जनपद सिद्धार्थनगर में भी प्रदेश संयुक्त मंत्री जनार्दन शुक्ल, प्रदेश आई टी सेल सह प्रभारी वीरेन्द्र सक्सेना के निर्देशन में मंडल अध्यक्ष बलवंत चौधरी जिला अध्यक्ष बृजेश द्विवेदी, महामंत्री संजय कर पाठक, कोषाध्यक्ष श्री.ष्ण चौधरी के नेतृत्व में समस्त शिक्षक, कर्मचारियों द्वारा डुमरियागंज सांसद जगदंबिका पाल के आवास पर घंटी बजाई। अटेवा सिद्धार्थनगर के बैनर तले शिक्षकों एवम कर्मचारियों ने सांसद जगदंबिका पाल के आवास पहुंचकर घंटी बजाकर अपनी पुरानी पेंशन बहाली की पुरजोर मांग की। इससे पूर्व सभी शिक्षक एवम कर्मचारी बीएसए ग्राउंड में एकत्रित हुए जहां पर प्रदेश, मण्डल एवम जिले के पदाधिकारियों द्वारा कहा गया कि पुरानी पेंशन हमारा संवैधानिक अधिकार है और सरकार इसे जल्द से जल्द बहाल करे, नहीं तो पूरे देश का शिक्षक कर्मचारी 1 अक्टूबर को दिल्ली में अपनी आवाज उठाने को तैयार है। इस कार्यक्रम में जिला मीडिया प्रभारी गौरव शुक्ल, बरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष प्रमोद त्रिपाठी राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जिलाध्यक्ष सुजीत जायसवाल, वाई के द्विवेदी, राजेश मिश्र, कर्मचारी शिक्षक संयुक्त मोर्चा के जिलाध्यक्ष रामकरन गुप्ता, महामंत्री कैलाश मणि त्रिपाठी, जिलाध्यक्ष पंचायती राज सफाई कर्मचारी संघ रणजीत गौतम, मंडल अध्यक्ष राजस्व संग्रह अमीन संघ महेश्वर मिश्र, जिलाध्यक्ष पेंशनर्स एसोसिएशन अवधेश यादव, जिला महामंत्री प्राथमिक शिक्षक संघ अतुल मिश्रा, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष अभय पांडेय, माध्यमिक शिक्षक संघ एकजुट के जिलाध्यक्ष अमित कुमार नेहा पांडेय, श्वेता श्रीवास्तव, आनन्द कुमार शुक्ल, शिव प्रसाद चौधरी, श्रुति शुक्ला सहित सैकड़ो कर्मचारियों व शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान से ब्राह्मणों में रोष,खंडन की मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। बिगत दिनों स्वामी प्रसाद मौर्य के बयान को लेकर पूरे देश में ब्राह्मणों में रोष की स्थिति बनी हुई है मंगलवार को जनपद सिद्धार्थनगर जिला मुख्यालय पर सर्वजन हित पार्टी एवं अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा की संयुक्त बैठक में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा ब्राह्मण समाज व हिंदू धर्म पर विवादित टिप्पणी को लेकर रोष देखा गया। मंगलवार को सर्वजन हित पार्टी एव अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित श्याम नारायण चौबे ने कहा कि स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा कहा गया है कि ब्राह्मणवाद की जड़े बहुत गहरी है व हिंदू नाम का कोई धर्म नहीं है हिंदू धर्म केवल धोखा है उन्होंने अपने इस विवादित बयान की एक वीडियो भी डाली है जिसके द्वारा समाज में कटुता पैदा कर समाज को बांटने एवं समाज को आपस में लडाने का कुचक्र किया जा रहा है जिसको लेकर अखिल भारतीय सर्वजन हित पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित श्याम नारायण चौबे ने कहा कि स्वामी प्रसाद मौर्य कहां से ब्राह्मण धर्म मिल गया जबकि अभी तक हम सभी को संज्ञान में हिंदू धर्म व सनातन धर्म ही आता है मौर्य ने कहा हिंदू धर्म धोखा है जबकि मौर्य जी स्वयं हिंदू धर्म में पैदा हुए हैं इस तरह की ओछी मानसिकता रखने वाला व्यक्ति पार्टी समाज का क्या भला करेगा बैठक में निर्णय लिया गया कि अगर मौया द्वारा दिए गए विवादित बयान का खंडन नहीं किया गया तो संगठन व पार्टी संयुक्त रूप से जिलाधिकारी के माध्यम से माननीय राजपाल महोदय को कानूनी कार्रवाई करने हेतु ज्ञापन देगी बैठक में उपस्थित अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के जिला अध्यक्ष पंडित सुधीर पांडे परसा बाबा, अमरनाथ पांडे उपाध्यक्ष, विनोद, अजय कुमार उपाध्याय, विक्रम लोधी, चिनक प्रजापति, मोहम्मद मुकीम, तौलन, सिद्धार्थ शुक्ला, दयानंद मिश्रा आदि लोगों की उपस्थिति रही।

पढ़ी-लिखी बिटिया एक घर को नही बल्कि दो घरों को रोशन करती है: विजय शंकर यादव

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बढ़नी,सिद्धार्थनगर। बढ़नी ब्लाक के ग्राम पंचायत चंदई के साथ हो रहे लैंगिक भेदभाव से समाज में परिवर्तन के लिये जागरूकता पैदा करना था। प्लान इंडिया के द्वारा बताया गया कि इन बालिका समूह को पटना से आये थियेटर कलाकारों संटू और सैंटी द्वारा 4 दिवस का प्रशिक्षण दिया गया है। बच्चियों को जेंडर आधारित हिंसा के बारे में बताया तथा पुलिस उन्हें कैसे सहयोग कर सकती है। इसके बाद बच्चियों ने नुक्कड़ नाटक लड़की हूँ का मंचन किया। इसके बाद रोशनी व संदीप चौधरी ने बताया कि समाज में लड़कियों के साथ बहुत से लैंगिक भेदभाव किये जाते है जैसे उन्हें शिक्षा न देना, जल्दी विवाह कर देना, हमे किसी घर

लिंग आधारित हिंसा से बचाव के लिए सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम तहत प्लान इंडिया के बालिका समूह व स्वर्गीय नैनमती संस्त उ० चंदई के बच्चों के सहयोग से किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सशस्त्र सीमा बल कोटिया बाजार से व तबरेज आलम ग्राम प्रधान चंदई का स्वागत बालिकाओं ने फूल देकर किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उ.श्य समाज में बालिकाओ के बड़े निर्णयों में शामिल न करना, लड़को जैसी देखभाल न मिलना। सशस्त्र सीमा बल की महिला आरक्षी कल्पना यादव ने सभी को बताया कि समाज के सभी लोगो को बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए प्रयास करना चाहिये, इसके साथ हम सब आपकी सुरक्षा के लिए है, इसलिए हमसे जरुरत नहीं है। ग्राम प्रधान चंदई ने सभी बालिकाओ का उत्साहवर्धन और कहा की हमारे पंचायत में कोई शिक्षा से वंचित न रहे उसको सहयोग चाहिए हम करेंगे। तबरेज आलम (ग्राम प्रधान चंदई) ने कहा कि इस तरह की गतिविधिया समुदाय में हमेशा होनी चाहिए ताकि समुदाय भी जागरूक हो। इस कार्यक्रम में सशस्त्र सीमा बल 43 वी बटा० से बाबू सिंह, हिमांशू भौमिक, ब्द्द निधि, प्रधान प्रतिनिधि जयकरन, जयसराम (कोटेदार) पीआरडी ब्लॉक कमांडर राजेंद्र प्रसाद, छल्ज्ञ से रुपेश, पिरामल फाउंडेशन, दीनानाथ, प्लान इण्डिया से जिला समन्वयक प्रसून शुक्ला, काजल श्रीवास्तव, विजयशंकर, शिवनंदन, शत्रुविजय सिंह व बालिका समूह सुंदरी, आरती, राजकुमारी, अंजू, भूमिका, खुशबु, काजल, शीतल, व युवा लकी, शिवम, सोनू, आशीष, सूरज, नोमान, महेश और स्व नैनमती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य व छात्र/छात्रायें, अभिभावक, शिक्षक, मीडिया से सुनील केसी उपस्थित रहें।

खड़ी ट्रक से बैट्री हुई चोरी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका,सिद्धार्थनगर। उसका राजा और बृजमनगंज के मार्ग पर गंगाधरपुर गांव में जाने वाली मार्ग के पास खड़ी ट्रक से बैट्री उड़ा ले गए चोर। ट्रक मालिक सरोज विश्वकर्मा ने जब घर से अपने ट्रक के पास आया तो देखा कि ट्रक का तार भी टूटा है और बैट्री गायब है जिसके बाद से ट्रक मालिक हैरान रह गया। ट्रक का नंबर नच 55 ।ज 3399 है जिसके बाद से ट्रक मालिक ने थाने पर तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है।

सम्पादकीय

तभी कहा जा रहा था कि कांग्रेस और उसके सहयोगी भी कुछ छोटी पार्टियों को जोड़ेंगे। जैसे बिहार से पप्पू यादव की जन अधिकार पार्टी को बुलाए जाने की चर्चा थी। उन्होंने बेंगलूरू में नहीं बुलाए जाने पर नाराजगी भी जताई थी। लेकिन लगता है कि उनके बारे में कोई फैसला नहीं हुआ है। पूर्वोत्तर से भी कोई पार्टी नहीं जुड़ रही है...

कोई नई पार्टी नहीं जुड़ रही है इंडिया में

विपक्षी पार्टियों के गठबंधन इंडिया की अगली बैठक मुंबई में 31 अगस्त और एक सितंबर के हो रही है। कांग्रेस, शिव सेना का उद्धव ठाकरे गुट और एनसीपी का शरद पवार गुट इस बैठक की तैयारियों में जुटा है। उद्धव, शरद पवार और अशोक चव्हाण ने तैयारियों को लेकर बैठक की है। अभी तक की जानकारी के हिसाब से कोई नई पार्टी इस बार नहीं जुड़ रही है। ध्यान रहे बेंगलुरू में हुई दूसरी बैठक में 10 से ज्यादा नई पार्टियां शामिल हुई थीं। पटना की पहली बैठक में 17 पार्टियों को बुलाया गया था, जिसमें से 15 पार्टियों के नेता शामिल हुए थे। बेंगलुरू में यह संख्या बढ़ कर 26 हो गई। उसके बाद से अंदाजा लगाया जा रहा था कि विपक्षी गठबंधन की अगली बैठक तक सहयोगी पार्टियों की संख्या में कुछ इजाफा हो सकता है। लेकिन अभी तक किसी नई पार्टी के जुडने की खबर नहीं है। गौरतलब है कि पिछले महीने 18 जुलाई को विपक्षी गठबंधन की बैठक के दिन ही दिल्ली में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की बैठक हुई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बैठक की अध्यक्षता की थी। उसमें 38 पार्टियों ने हिस्सा लिया था। हालांकि ज्यादातर पार्टियां बहुत छोटी थी और उनके नेताओं की पहचान अपने चुनाव क्षेत्र से बाहर नहीं थी। लेकिन भाजपा ने यह मैसेज बनवाया था कि विपक्षी गठबंधन श्इंडियाश्य से बड़ा उसका कुनबा है। बाद में प्रधानमंत्री मोदी एनडीए के सभी घटक दलों के सांसदों से मिले और भाजपा ने सभी घटक दलों के प्रवक्ताओं का प्रशिक्षण भी कराया। तभी कहा जा रहा था कि कांग्रेस और उसके सहयोगी भी कुछ छोटी पार्टियों को जोड़ेंगे। जैसे बिहार से पप्पू यादव की जन अधिकार पार्टी को बुलाए जाने की चर्चा थी। उन्होंने बेंगलूरू में नहीं बुलाए जाने पर नाराजगी भी जताई थी। लेकिन लगता है कि उनके बारे में कोई फैसला नहीं हुआ है। पूर्वोत्तर से भी कोई पार्टी नहीं जुड़ रही है। उत्तर प्रदेश की कई छोटी पार्टियां पिछले विध ानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ लडी थीं लेकिन इस बार सब भाजपा से तालमेल की संभावना देख रहे हैं। तभी कहा जा रहा है मुंबई में विपक्षी पार्टियों की बैठक में 26 पार्टियां हिस्सा लेंगी, जिनके करीब 80 नेता बैठक में शामिल होंगे। पांच राज्यों के मुख्यमंत्री भी शामिल होंगे, जिनमें दो मुख्यमंत्री आम आदमी पार्टी के होंगे। उनके अलावा पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी, तमिलनाडु के एमके स्टालिन और झारखंड के हेमंत सोरेन शामिल होंगे।

बहन भाई और स्त्रियां संभ्रांत व्यक्ति के हाथों में बांधती हैं रक्षा सूत्र

पवित्र श्रावण मास व्यतीत होने वाला है। आज रक्षा बंधन का पर्व है। ध्यातव्य है कि रक्षा बंधन का पवित्र पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा की तिथि को पड़ता है। आज के दिन बहनों द्वारा भाइयों की कलाइयों में रक्षा सूत्र के रूप में प्यार, ममता और स्नेह का बंधन बंधा होता है। रक्षा सूत्र बांधकर बहनें भगवान शिव से अपने भाईयों की सलामती के लिए प्रार्थना करती हैं। सनातनी मान्यता और विश्वास है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश का रक्षा सूत्र में वास होता है। कहते हैं कि जब तक भाइयों के हांथ में रक्षासूत्र बंधा होता है तब तक यमराज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं। सनातनी मान्यता के अनुसार रक्षा सूत्र बांधने के पश्चात भाई भी बहनों की रक्षा का वचन देते हैं। राखी की यह मर्यादा होती है। बहन और भाई के प्रेम का यह डोर है। दरअसल भारतीय शास्त्रों के इतिहास पर नजर डालें तो पूजा पाठ और कथाओं में भगवान जी पर रक्षा सूत्र चढ़ाने की परंपरा रही है। मान्यता और विश्वास यह है कि रक्षा सूत्र चढ़ाने से देवता जातकों पर प्रसन्न होते हैं। इसीलिए संबंधित जातक की रक्षा भी करते हैं। कालांतर में बहनों ने अपने भाईयों को देवता स्वरूप मानकर इस रक्षा सूत्र को बांधना शुरू किया। यह भारतीय सनातनी इतिहास की महान परंपरा है। दुनिया के अन्य धर्मों के इतिहास में ऐसी परंपरा कहीं नहीं मिलती है। भारतीय परिवारों के सुरक्षित और संरक्षित रहने का एकमात्र कारण यह भी है कि यहां सभी एक दूसरे से प्रेम के धागे में गूंथे हुए हैं। रक्षाबंधन बांधने की परंपरा पुत्रियों द्वारा पिता को भी बांधने की हैं। इसके अलावा समाज के प्रतिष्ठित लोगों को भी रक्षा बंधन बांधने का चलन है। रक्षा बंधन सनातनी हिंदू एकीकरण के मार्ग को प्रशस्त करता है। इस वर्ष 30 अगस्त की रात 9 बजकर 02 मिनट से 31 अगस्त को प्रातः 7 बजकर 30 मिनट तक रक्षा सूत्र बांधने का शुभ मुहूर्त है। गौरतलब है कि 30 अगस्त को प्रातः 10 बजकर 5 मिनट से रात 9 बजकर 2 मिनट तक भद्रा है। भद्रा में रक्षा बंधन बांधना कदाचित अनुचित है। इसलिए इस बार 30 और 31 दो दिन रक्षा बंधन का पवित्र पर्व मनाया जा रहा है।

लेखक विनय कांत मिश्र/दैनिक बुद्ध का सन्देश

बोतल में लौटता नहीं यह जिन्न...

पिछले कुछ समय से ऐसे अनेक दृष्टांत सामने आये हैं जब सत्ता व समाज के शीर्ष पर बैठे लोगों की अपीलें भी काम नहीं आ रही हैं। एक बार तो स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दलितों के उत्पीड़न से व्यथित होकर कह चुके हैं– दलितों को मारने से अच्छा है कि उन्हें (पीएम को) मार दें। ऐसे ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत भी अपने लोगों को समझा चुके हैं कि श्मुस्लिम भी भाई ही ...

हरियाणा के नूंह (मेवात) में सोमवार को जिस तरह से शोभायात्रा निकालने के मामले में हिन्दू संगठन और प्रशासन आमने–सामने हैं, उससे साबित हो गया है कि कट्टरता का जिन्न एक बार बाहर निकले तो उसे वापस बोतल में डालना बहुत मुश्किल होता है। हर साल यहां श्रावण मास के अंतिम सोमवार को होने वाली ब्रजमंडल यात्रा बहुत प्रसिद्ध है जिसमें देश भर से बड़ी तादाद में श्रद्धालु आते हैं। 31 जुलाई को यहां के नलहड़ मंदिर के पास निकली यात्रा के दौरान हुए पथराव व तत्पश्चात हुए साम्प्रदायिक दंगों के चलते इस बार प्रशासन ने इसकी अनुमति नहीं दी थी लेकिन हिन्दू संगठन इसे निकालने के लिए आमादा हैं जिन्होंने पहले ही चेता दिया था कि उन्हें किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। नूंह के साथ ही पूरे हरियाणा में इसे लेकर तनाव है। जुलाई की आग अभी पूरी तरह से शांत नहीं हुई है और यह नये तनाव का सबब बन गया है। सोमवार को यहां धारा 144 लगा दी गई है। मंगलवार तक इंटरनेट सेवाएं बन्द रखने का ऐलान कर दिया गया है ताकि अफवाहें न फैले। प्रशासन की इस बात से नाराज हिन्दू संगठनों का न सिर्फ नूंह में बड़ा जमावड़ा है वरन सटे हुए गुरुग्राम जिले के उस हिस्से में भी दहशत फैल गई है जहां झुग्गी बस्तियां हैं और जिनमें ज्यादातर अल्पसंख्यक बसते हैं। यह वही इलाका है जहां पिछले वक्त आगजनी हुई थी और कुछ लोग मारे गये थे। सोमवार की सुबह यहां हिन्दू संगठनों द्वारा दीवारों पर लिखा पाया गया कि वे (अल्पसंख्यक) इस इलाके को खाली कर दें क्योंकि यहां से शोभा यात्रा निकलेगी। वैसे यहां के अनेक लोग पिछले दंगों के समय से ही बस्तियां छोड़कर अन्यत्र जा चुके हैं। पुलिस के आला अफसरों ने आश्वस्त तो किया है कि वे (झुग्गीवासी) न घबरायें परन्तु पिछली वारदात का खौफ इतना है कि लोगों का पुलिस व स्थानीय प्रशासन ही नहीं सरकार पर से भी भरोसा उठ चुका है। इन इलाकों में पिछले कुछ समय से तनाव और डर का माहौल है। राज्य सरकार हिन्दू संगठनों के आगे बेबस दिख रही है। प्रशासन ने शोभा यात्रा न निकलने देने के लिये पूरे इलाके में पुलिस की तैनाती की है, तो वहीं हिन्दू संगठन इस आदेश को न मानने पर आमादा हैं। वैसे नलहड़ मंदिर में पूजा के लिये प्रतीकात्मक रूप से 11 लोगों को अनुमति तो दी गई है पर इसे हिन्दू संगठन नहीं मान रहे हैं। उधर इस पूरे परिदृश्य में किसान नेता राकेश टिकैत की भी एंट्री हो गई है जिन्होंने कहा है कि अगर शोभा यात्रा निकाली गई या प्रशासन ने उन्हें अनुमति दी तो जवाब में किसान लाखों ट्रैक्टरों के साथ विशाल रैली निकालेंगे और महापंचायत भी करेंगे। उल्लेखनीय है कि जुलाई के अंत में हुए दंगों में किसान अल्पसंख्यकों के साथ थे। जाटों व मुस्लिमों की एकता से भारतीय जनता पार्टी के लोग और कट्टरवादी संगठन कमजोर पड़ गये थे। पिछले कुछ समय से इस यात्रा के कारण मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर पसोपेश में हैं क्योंकि शोभा यात्रा को अनुमति न देने से हिन्दुओं की उन्हें चुनावों में नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। सरकार की पहले ही काफी भद्द भी पिट चुकी है। अगर शोभा यात्रा निकली और फिर से हिंसा हुई तो उसे सम्भाल पाना सरकार के लिये खासा मुश्किल होगा। नूंह जिला गुरुग्राम से लगा हुआ है जो देश का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र है। यहां दुनिया के कई महत्वपूर्ण उद्योग–धंधों के मुख्यालय व कारखाने हैं। देश के जिन तीन शहरों की प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक है उनमें एक गुरुग्राम भी है जहां होने वाली हिंसा का असर कारोबार जगत और भारत की छवि पर पड़ेगा। उम्मीद तो है कि हिन्दू संगठन देश के अमन–चौन को ध्यान में रखकर इस शोभा यात्रा को सीमित व प्रतीकात्मक रूप से निकालेंगे और इसे प्रतिष्ठा का मुद्दा नहीं बनायेंगे। प्रशासन को भी चाहिये कि वह अपने निर्देशों का पालन कड़ाई से करे। साथ ही यह भी आवश्यक है कि संविधान को लागू करने की जिम्मेदारी जिन पर है, वे अपने दायित्वों का पालन कर कानून व व्यवस्था का राज बनाए रखें। वैसे यह मामला इस बात का सटीक उदाहरण है कि कट्टरता को जब एक बार राज्य की ओर से बढ़ावा मिलता है तो उसे नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। अनेक संगठन या व्यक्ति संविध ान से ऊपर हो जाते हैं। धार्मिक संगठनों के हौसले पिछले कुछ समय से जिस बुलन्दी पर हैं, वह संविधान के लिये चुनौती बन गया है। ऐसे संगठन व लोग यह मानते हैं कि कानून का पालन करना उनके लिये आवश्यक नहीं है। पिछले कुछ समय से ऐसे अनेक दृष्टांत सामने आये हैं जब सत्ता व समाज के शीर्ष पर बैठे लोगों की अपीलें भी काम नहीं आ रही हैं। एक बार तो स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दलितों के उत्पीड़न से व्यथित होकर कह चुके हैं– श्दलितों को मारने से अच्छा है कि उन्हें (पीएम को) मार दें।श ऐसे ही, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत भी अपने लोगों को समझा चुके हैं कि श्मुस्लिम भी भाई ही हैं और इन्हें मारने वाले हिन्दू नहीं हो सकते।श जिस विचारधारा के लोग हिन्दू संगठनों को चला रहे हैं या उनके सदस्य हैं, उनमें से ज्यादातर भाजपा एवं संघ से जुड़े हैं। अपील करने वाले अपने–अपने संगठनों के शीर्ष पर हैं। जब उनका कहा बेअसर हो रहा है, तो हरियाणा के सीएम या प्रशासन की बिसात ही क्या है! नफरत और हिंसा का जिन्न वापस जाने के लिए बोतल से नहीं निकलता।

{ रीति–रिवाज पर, धर्म पर, भाषा पर, खानपान पर, गाय पर, चीते पर, राजचिह्न पर, सेंगोल पर, संविधान की धाराओं पर, संसद के निर्माण पर, वंदेभारत रेल पर, प्रगति मैदान की सुरंग पर, सिर्फ ऊधमी बिगुल बजाना है। छिप–छिपा कर और खुलेआम किए गए अपने हर करतब के बखान की ध्वनि को डेढ़ सौ डेसिबल तक पहुंचाने के लिए जी–जान एक कर देना है। सो, थोड़े दिनों के लिए चंद्रयान का ... }

ऊधमबाजी से रुआंसा हुआ चंद्रयान

पंकज शर्मा

चंद्रयान–3 जितने हौले–से चंद्रमा की सतह पर उतरा, हमारी सत्तारूढ़–मंडली इसकी श्रेय की कलगी जिघ्ल्ल–ए–सुब्हानी के साफे पर टांकने को उतने ही जोर से लपकी।ज् दरअसल हमें हर बात पर बस ऊधम मचाना है। रीति–रिवाज पर, धर्म पर, भाषा पर, खानपान पर, गाय पर, चीते पर, राजचिह्न पर, सेंगोल पर, संविधान की धाराओं पर, संसद के निर्माण पर, वंदेभारत रेल पर, प्रगति मैदान की सुरंग पर, सिफर्ध ऊधमी बिगुल बजाना है। छिप–छिपा कर और खुलेआम किए गए अपने हर करतब के बखान की ध्वनि को डेढ़ सौ डेसिबल तक पहुंचाने के लिए जी–जान एक कर देना है। ज् चंद्रयान–3 जितने हौले–से चंद्रमा की सतह पर उतरा, हमारी सत्तारूढ़–मंडली इसकी श्रेय की कलगी जिघ्ल्ल–ए–सुब्हानी के साफे पर टांकने को उतने ही जोर से लपकी।

चंद्रयान–3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की सतह पर जितने हौले–से उतरा, हमारी सत्तारूढ़–मंडली इस के समूचे श्रेय की कलगी जिघ्ल्ल–ए–सुब्हानी के साफे पर टांकने को उतने ही जोर से लपकी। ताबेदार अपने सुल्तान के मन की बात न जानें तो काहे के ताबेदार? फिर जिघ्ल्ल–ए–सुब्हानी स्वयं भी कौन–से संकोची हैं? एक दशक में संसार की सारी रोशनी का किरण–केंद्र उन्होंने जैसे खुद्द पर कर रखा है, उस की चुधियाहट में कोई और किसी को दिखाई ही कहां दे रहा है? सो, छोटे परदे और अखघ्बार के पन्नों के आधे से ज्यादा हिस्से पर पर हम ने अपने प्रजापालक को पसरे देखा और चंद्रयान बेचारा चंदामामा की गोद में सिकुड़ कर छुप गया। ब्रिक्स की बेइंतिहा मसरूफियत के बावजूद अपना अमूल्य समय निकाल कर हमारे सुल्तान ने इसरो के प्रमुख श्रीधर पणिक्कर सोमनाथ को याद दिलाया कि उन के तो नाम में ही श्सोमश्य है, सो, सोमनाथ के होते चंद्रयान भला कैसे चांद पर न उतरता? भगवान शिव के प्रति अपने प्रधानमंत्री के ऐसे भक्तिभाव ने मुझे गदगद कर दिया। विज्ञान की उपलब्धियों को अध्यात्म की छुअन दे कर सोने पर सुहागा करने की जैसी विलक्षण कला नरेंद्र भाई मोदी में है, मैं ने तो किसी और में नहीं देखी। राजा दक्ष प्रजापति के श्राप से मुक्ति पाने के लिए चंद्र देवता ने शिव को अपना स्वामी मान कर पृथ्वी पर जहां तपस्या की थी, वह जगह गुजरात के सौराष्ट्र में है। चंद्र देवता ने शिव से वहां ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित होने का आग्रह किया। बारह ज्योतिर्लिंगों में से यही पहला है दृ सोमनाथ। मैं भी पूरी आस्था से यह बात मानता हूं कि विज्ञान–फिज्ञान अपनी जगह है, मगर अगर ईश्वर साथ न हो तो सफलता नहीं मिलती। इसलिए हमें अपने चंद्रयान अभियान की भावी श्रंखलाओं को भी सफल बनाने के लिए यह ध्यान रखना बेहतर होगा कि इसरो के सभी अगले प्रमुखों के नामों में रुद्र, पशुपति, महेश्वर, वामदेव, शंकर, श्रीकंठ, अंबिकानाथ, गंगाधर, जटाध ार, विश्वेश्वर, मृत्युजय जैसे शब्दों का समावेश हो। ऐसा होगा तो चंद्रयानों की झड़ी लग जाएगी। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने अब हमें इतना जागरूक तो बना ही दिया है कि हम जानें भी और मानें भी कि इसरो के अब तक के 89 उपग्रह मिशनों में से 47 का लॉच नरेंद्र भाई मोदी के नौ साल में हुआ है। यानी इसरो की स्थापना के बाद 52 बरस में सिफर्ध 42 सैटेलाइट लॉच हुए दृ हर सवा साल में एकय और, नरेंद्र भाई के राज में हर साल पांच से ज्यादा। नरेंद्र भाई के पहले 13 लोग देश के प्रधानमंत्री बने, पर सब ऊंघते रहे। आप कहते रहिए कि नरेंद्र भाई के आगमन के बाद हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रमों का बजट घटा है, लेकिन सच्चाई तो यही है कि विज्ञान की हमारी दुनिया के भाग्य तो 2014 के बाद ही खुले हैं। कोई समझा हो, न समझा हो, मैं तो साढ़े चार बरस पहले ही समझ गया था कि अब आकाश–जगत में भारत को विश्व–गुरु बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। फरवरी 2019 में जिस दिन प्रधानमंत्री जी ने पाकिस्तानी सरहद में बने आतंकवादी अड्डो पर सर्जिकल स्ट्राइक की तारीखध मौसम की खराबी की वजह से बदलने की इजाजत नहीं दी और कहा कि बादल और बरसात हैं तो और भी अच्छा है, क्योंकि पाकिस्तान के राडार हमारे विमानों को पकड़ नहीं पाएंगेय मैं तो उसी दिन से लंबी चादर तान कर निश्चिंत सो रहा हूं। काहे का इसरो? काहे के वैज्ञानिक? चंद्रयान का चांद पर अवतरण हमारे मौजूदा राजनीतिक नेतृत्व की प्रज्ञा और कौशल की उपलब्धि है। पहले के प्रधानमंत्रियों की तरह अगर नरेंद्र भाई भी तंद्राभिभूत होते तो क्या हम चांद पर उतरने वाला चौथा और उस के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बनते? आजादी के बाद 1948–49 में भारत सरकार का बजट 197 करोड़ रुपए का था। पंडित जवाहरलाल नेहरू तब कसामुसी के चलते विज्ञान परियोजनाओं के लिए सिफर्ध एक करोड़ 10 लाख रुपए आवंटित कर पाए थे। यानी बजट का तकरीबन आधा प्रतिशत। मगर जब नेहरू के कार्यकाल के आखघिर में देश का बजट 1700 करोड़ रुपए हो गया तो विज्ञान परियोजनाओं के लिए उन्होंने 85 करोड़ रुपए रखे। यानी पांच प्रतिशत। एक करोड़ से 85 करोड़ रुपए तक का इजाफा। यह 15 साल में 85 गुना बढ़ोतरी ही हुई न? और, अब हाल क्या है? आज जब देश का बजट करीब साढ़े 39 लाख करोड़ रुपए का है, विज्ञान परियोजनाओं के लिए नरेंद्र भाई ने 14217 करोड़ रुपए दिए हैं। यानी आध ा प्रतिशत से भी कम। मगर फिर भी नेहरू विज्ञान को ले कर आलसी थे और नरेंद्र भाई ने विज्ञान परियोजनाओं को ऐसी रफ्तार दे दी है कि भूतो न भविष्यति। यही बात मैं ने चंद्रयान पर हुई टेलीविजन बहसों में कह दी तो नखेंद्रोन्मुख बहसबाज तो बहसबाज, गिलगिल करने वाले टीवी–सूत्रधार भी शाब्दिक ताडव करने लगे। चंद्रशेखर वेंकट रामन, होमी जहांगीर भाभा, विक्रम साराभाई, हरगाविंद खुराना, सतीश धवन, शांतिस्वरूप भटनागर, एपीजे अब्दुल कलाम, वगैरह आज होते तो विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हासिल हो रही उपलब्धियों के नाम पर पिछले कुछ वक्घ्त से हो रही सियासत को देख कर अपना सिर पीट रहे होते। ठीक है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति विकास परियोजनाओं को गति देने का प्रमुख घटक है। लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य हासिल करने के अदम्य हौसले के लिए अपने वैज्ञानिकों, अपने सैन्यबलों, अपने श्रमिकों, अपने कृषकों, अपने शिक्षाविदों और समाज के समूचे क्षितिज को संभाले बैठे नायक–नायिकाओं के अनुगमन की भावना के बजाय उन के श्रेय में सेंधमारी की नीयत रखना, आप ही बताइए, अक्षम्य है या नहीं? उन के स्वेद–बिंदुओं से स्वयं की सूरत संवारने का सिलसिला समाप्त होना चाहिए या नहीं? पिछले एक दशक में ऊधमबाजी की बढ़ती प्रवृत्ति ने हमारे सकारात्मक प्रतिफलों के उत्सवों को भी हो–हल्ले में तब्दील कर दिया है। अब हम अपने अर्जन–सृजन के संगीत का आनंद लेने को नहीं थिरकते हैं, लाल रोशनी और नीले धुएं का अंबार लगा कर चिल्लपों में डूबते–उतरते हैं। हमें हर बात पर बस ऊधम मचाना है।

एशिया कप 2023: श्रीलंका नहीं जाएंगे KL Rahul , कोच राहुल द्रविड़ ने श्रेयस अय्यर पर भी दिया बड़ा अपडेट

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य चयनकर्ता अजित अगरकर का कहा हुआ सच साबित हुआ। दरअसल, अगरकर ने कहा था कि केएल राहुल अभी पूरी तरह से फिट नहीं हैं। वह एशिया कप 2023 के लिए भारतीय टीम के साथ श्रीलंका नहीं जाएंगे। वहीं भारतीय टीम के कोच राहुल द्रविड़ ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में इसकी पुष्टि की है। कोच द्रविड़ ने बताया कि केएल राहुल अभी पूरी तरह से फिट नहीं है। वो एशिया कप के लिए टीम के साथ श्रीलंका नहीं जाएंगे, फिलहाल वो अभी एनसीए में ही रहेंगे।

श्रेयस अय्यर पर दिया अपडेट : राहुल द्रविड़ ने बताया कि केएल राहुल पहले से काफी बेहतर हैं। लेकिन अभी वो पूरी तरह फिट नहीं हुए हैं। वो भारतीय टीम के साथ कैंडी के पल्लीकेले में होने वाले मुकाबलों में मौजूद नहीं रहेंगे। साथ ही भारतीय कोच ने कहा कि, श्रेयस अय्यर पूरी तरह फिट हैं। बस उन्हें ज्यादा मुकाबले खेलने को नहीं मिले हैं, लेकिन मुझे लगता है कि एशिया कप में वो कमी भी पूरी हो जाएगी।

राहुल द्रविड़ ने इस दौरान ये स्पष्ट किया कि चूंकि एशिया कप के बाद भारत में ही वनडे वर्ल्ड कप होना है। ऐसे में खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा मौके देने की कोशिश रहेगी। इसके अलावा भारतीय कोच ने कहा कि टीम में बदलाव सोच समझकर किए जाते हैं। टीम में अनुभवी खिलाड़ियों का रहना फायदेमंद है। भारतीय क्रिकेट टीम को पल्लीकेले में 2 सितंबर को पाकिस्तान के खिलाफ जबकि 4 सितंबर को नेपाल के खिलाफ खेलना है।

एशिया कप के लिए भारतीय स्क्वॉडः रोहित शर्मा (कप्तान), शुबमन गिल, केएल राहुल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव, तिलक वर्मा, इशान किशन, हार्दिक पांड्या, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद शमी, मोहम्मद सिराज, जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव।

जोकोविच ने यूएस ओपेन 2023 में जीत के साथ मनाया वापसी का जश्न, रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचना तय

नोवाक जोकोविच ने अमेरिकी ओपन में यादगार वापसी करते हुए सोमवार को एलेक्जेंडर मुलर पर 6–0, 6–2, 6–3 से जीत दर्ज की। इस जीत के साथ ही जोकोविच का रैंकिंग में फिर से शीर्ष स्थान पर पहुंचना भी पक्का हो गया।

सर्बिया के इस खिलाड़ी को पिछले साल अमेरिका की यात्रा करने की अनुमति नहीं दी गई थी क्योंकि उन्हें कोविड–19 का टीका नहीं लगा है। रिकॉर्ड 23 ग्रैंड स्लैम खिताब के इस विजेता को हालांकि मैच शुरू होने के लिए काफी इंतजार करना पड़ा। आर्थर ऐश स्टेडियम में इससे पहले खेले गये कोको गॉ का मैच लगभग तीन घंटे तक चला और फिर पुरुषों के बराबर महिलाओं को पुरस्कार राशि मिलने की 50वीं वर्षगांठ के कार्यक्रम के कारण जोकोविच के मुकाबले में काफी विलंब हुआ।

जोकोविच ने इस जीत के बाद कहा, '' मुझे पता था कि मेरा मुकाबला काफी देर से होगा। मैं हालांकि कोर्ट पर जाने के लिए उत्साहित था। मैंने आधी रात के बाद शुरुआत की लेकिन मुझे इसकी कोई परवाह नहीं थी। मैं कुछ वर्षों से इस पल का इंतजार कर रहा था कि मैं अपने खेल के सबसे बड़े स्टेडियम में रात के सत्र में खेल सकूं।'' जोकोविच इससे पहले 2021 के सत्र में इस टूर्नामेंट में खेले थे। तब फाइनल में दानिल मेदवेदेव ने उन्हें हराकर करियर ग्रैंडस्लैम पूरा करने का उनका सपना तोड़ा था। दूसरी वरीयता प्राप्त इस खिलाड़ी ने अमेरिकी ओपन के पहले दौर में अपने शत–प्रतिशत जीत का रिकॉर्ड बरकरार रखा। यह लगातार 17वीं बार है जब जोकोविच ने पहले दौर का मुकाबला जीता है। इस जीत के बाद वह 11 सितंबर को जारी होने वाली एटीपी रैंकिंग में कार्लोस अलकराज को हटाकर शीर्ष पर पहुंच जायेंगे।

एशिया कप की ओपनिंग सेरेमनी की लाइव स्ट्रीमिंग, ये सितारे बिखेरेंगे अपना जलवा

एशिया कप 2023 का आगाज बुधवार यानी 30 अगस्त से होने जा रहा है। मुल्तान में पाकिस्तान और नेपाल के बीच होने वाले मुकाबले से इस टूर्नामेंट का आरंभ होगा। एशिया कप के 16वें सीजन की मेजबानी पाकिस्तान के पास है। वहीं इस बार एशिया कप हाईब्रिड मॉडल के तहत खेला जाएगा। साथ ही टी20 की जगह वनडे फॉर्मेट में भी होगा।

बता दें कि, हाईब्रिड मॉडल के तहत चार मुकाबले जिसमें भारत के मुकाबले नहीं हैं वो पाकिस्तान में खेले जाएंगे जबकि अन्य मुकाबले श्रीलंका में होंगे। साथ ही 2018 के बाद अब पांच साल बाद वनडे एशिया कप का आयोजन होने जा रहा है।

एशिया कप में कुल 6 टीमें हिस्सा ले रही हैं। इन्हें तीन–तीन के ग्रुप में रखा गया है। भारत, पाकिस्तान और नेपाल ग्रुप श्एश में हैं। जबकि अफगानिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका ग्रुप बी में हैं। टीमें ग्रुप स्टेज में अपने हर टीम को एक–दूसरे के खिलाफ भिड़ना है। फिर सुपर ग्रुप की टीम के साथ एक बार भिड़ेंगी और दो–दो मैच खेलेंगी। इसके बाद दोनों ग्रुप से टॉप 2 टीमें सुपर चार में जाएंगी। जहां चार की टॉप दो टीमें 17 सितंबर को फाइनल में भिड़ेंगी।

एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी से जुड़ी जानकारी

एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन कब होगा?

एशिया कप 2023 का पहला मुकाबला पाकिस्तान और नेपाल के बीच खेला जाएगा। इस मुकाबले से पहले ही टूर्नामेंट की ओपनिंग होगी। इसका मतलब ये है कि मुकाबले का टॉस भारतीय समयानुसार दोपहर 2.30 बजे होगा। जबकि मुकाबला शुरु दोपहर 3 बजे से होगा।

एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन कहां होगा?

एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन मुल्तान क्रिकेट स्टेडियम में होगा। एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी का लाइव प्रसारण कहां होगा?

एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी का लाइव प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स पर होगा। वहीं इसकी अलग–अलग भाषाओं के चौनल पर सेरेमनी का लुत्फ उठा सकते हैं। जबकि आयोजन की लाइव स्ट्रीमिंग डिज्नीहॉटस्टार पर उपलब्ध होगी।

ये सितारे बिखेरेंगे अपना जलवाः एशिया कप 2023 की ओपनिंग सेरेमनी में एआर रहमान और आतिफ असलम जैसे बड़े स्टार परफॉर्म करते नजर आ सकते हैं।

चीनं के नए नक्शे पर भारत की कड़ी प्रतिक्रिया, कहा– इनका कोई आधार नहीं है, ऐसे तो सीमा विवाद.

चीन द्वारा अपने ष्मानक मानचित्रष का 2023 संस्करण जारी करने के बाद सरकार ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। इसमें अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन क्षेत्र को शामिल किया गया है। चीन के तथाकथित 2023 ष्मानक मानचित्रष पर मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा कि भारत ने इसे लेकर कड़ा विरोध दर्ज कराया है। उन्होंने कहा, ष्हमने आज चीन के तथाकथित 2023 ष्मानक मानचित्रष पर चीनी पक्ष के साथ राजनयिक चौनलों के माध्यम से एक मजबूत विरोध दर्ज कराया है जो भारत के क्षेत्र पर दावा करता है।ष उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हम इन दावों को खारिज करते हैं क्योंकि इनका कोई आधार नहीं है। चीनी पक्ष के ऐसे कदम केवल सीमा प्रश्न के समाधान को जटिल बनाते हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को चीन के नवीनतम मानचित्र पर अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन को अपना क्षेत्र बताने को लेकर बयान दिया है। जयशंकर ने कहा कि यह उनकी पुरानी आदत है। ये (क्षेत्र) पूरी तरह से भारत का हिस्सा हैं। यह सरकार बहुत स्पष्ट है कि हमारे क्षेत्र क्या हैं। बेतुके दावे करने से दूसरे क्षेत्र आपके नहीं हो जाते। कांग्रेस ने अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन को चीन के मानचित्र में दिखाये जाने पर मंगलवार को कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि ये भारत के अभिन्न अंग हैं जिसे किसी 'आदतन अपराधी' द्वारा ऐसे अवैध सीमांकन या मनमाने तरीके से बनाये नक्शे से नहीं बदला जा सकता। कांग्रेस ने सरकार से कहा कि आगामी जी20 सम्मेलन के दौरान भारतीय क्षेत्र में चीन की घुसपैठ का वैश्विक स्तर पर खुलासा किया जाए। चीन ने सोमवार को आधिकारिक तौर पर अपने मानक मानचित्र के 2023 संस्करण को जारी किया जिसमें अरुणाचल प्रदेश, अक्साई चिन क्षेत्र, ताइवान और विवादित दक्षिण चीन सागर पर उसके दावों सहित अन्य विवादित क्षेत्रों को शामिल किया गया है। भारत ने बार–बार कहा है कि अरुणाचल प्रदेश उसका अभिन्न अंग है और हमेशा रहेगा। चीन के सरकारी समाचारपत्र ग्लोबल टाइम्स ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, ''चीन के मानक मानचित्र का 2023 संस्करण आधिकारिक तौर पर सोमवार को जारी किया गया और प्राकृतिक संसाधन मंत्रालय के स्वामित्व वाली मानक मानचित्र सेवा की वेबसाइट पर इसे जारी किया गया। यह मानचित्र चीन और दुनिया के विभिन्न देशों की राष्ट्रीय सीमाओं की रेखांकन विधि के आधार पर संकलित किया गया है।

देसी घी में बना चिकन –मटन, आलीशान बेड, एयर कूलर जेल में इमरान खान के राजाओं वाले ठाठ

द न्यूज इंटरनेशनल ने मंगलवार को बताया कि पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री इमरान खान को अटॉक जेल में घी में पकाया हुआ देसी चिकन और मटन परोसा जा रहा है, जहां वह वर्तमान

में बंद हैं। पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया गया है कि अटक जेल में पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ के अध्यक्ष को उनकी प्रोफाइल और कानूनी स्थिति को देखते हुए सभी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। शीर्ष अदालत द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री की जीवन स्थितियों पर रिपोर्ट मांगे जाने के बाद जेल प्रशासन की ओर से अटॉर्नी जनरल के कार्यालय द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ। द न्यूज इंटरनेशनल ने रिपोर्ट के हवाले से बताया कि इस जेल का सबसे सुरक्षित कारावास ब्लॉक नंबर 02 है जिसे खाली कर दिया गया था और चार कोशिकाओं वाले एक खंड को उक्त दोषी कैदी के कारावास के लिए उच्च अवलोकन ब्लॉक घोषित किया गया था।ष रिपोर्ट में कहा गया है। सुविधाओं पर प्रकाश डालते हुए, जेल प्रशासन ने प्रस्तुत किया कि दोषी कैदी को 09•11 आकार की सेल में कैद किया गया था। अदालत को सूचित किया गया कि उक्त कोठरी को सफेद कर दिया गया था, जबकि पूरे फर्श को सीमेंट कर दिया गया था और एक छत पंखा लगाया गया था। इसमें कहा गया है कि पूर्व प्रधान मंत्री द्वारा उपयोग किए जाने वाले शौचालय को 7•4 फीट तक बढ़ाया गया था और इसकी दीवार को पांच फीट तक बढ़ाया गया था, साथ ही 2–12•5 फीट का फाइबर दरवाजा भी लगाया गया था। इसके अलावा, एक नई टॉयलेट सीट, मुस्लिम शॉवर, टिशू स्टैंड और स्टेनलेस स्टील का नल लगाया गया था, जबकि स्नान और चेहरा धोने के लिए एक बड़े दिखने वाले ग्लास वाला वॉश बेसिन लगाया गया था। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें सप्ताह में दो बार देसी चिकन भी परोसा जा रहा था, जबकि पूर्व प्रधानमंत्री को घी में पका हुआ मटन भी उपलब्ध कराया जा रहा था।

चीन और पाकिस्तान मिलकर ऐसा क्या कर रहा है, जिससे भारत की बढ़ सकती है टेंशन?

भारत के दो सबसे बड़े दुश्मन चीन और पाकिस्तान की वायु सेनाओं ने संयुक्त हवाई युद्धभ्यास शाहीन 10 शुरू किया है। चीनी रक्षा मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि दोनों पक्षों की जमीनी और वायु सेनाएं संयुक्त वायु रक्षा, संयुक्त जवाबी कार्रवाई और संयुक्त जब्ती और नियंत्रण जैसे विशिष्ट युद्ध परिदृश्यों में संयुक्त प्रशिक्षण आयोजित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं। मंत्रालय ने कहा कि चीन में होने वाले अभ्यास के दौरान दोनों पक्ष लड़ाकू विमानों, प्रारंभिक चेतावनी वाले विमानों और कई अन्य प्रकार के विमानों के साथ–साथ जमीन से हवा में मार करने वाली मिसाइलों और रडार और सिग्नल सैनिकों का उपयोग करेंगे। इसमें कहा गया है कि प्रशिक्षण में चीनी नौसैनिक विमानन इकाइयां भी शामिल होंगी। दोनों देशों ने पहली बार इस तरह का अभ्यास 2011 में किया था। चीन पाकिस्तान के सबसे बड़े रक्षा साझेदार का प्रतिनिधित्व करता है, उसके बाद अमेरिका का नंबर आता है। इससे पहले, चीनी रक्षा मंत्रालय ने कहा था कि वह इस सप्ताह सिंगापुर के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास शुरू करेगा। इसमें कहा गया है कि सहयोग–2023 संयुक्त सैन्य अभ्यास अगस्त के अंत से सितंबर के मध्य तक आयोजित किया जाएगा। इसमें कहा गया है कि सैनिक स्नाइपिंग कॉम्बैट, क्लोज–क्वार्टर कॉम्बैट, रैपलिंग और बंधक बचाव में भाग लेंगे। चीन और पाकिस्तान की सेनाओं में लगातार सहयोग बढ़ता जा रहा है। दोनों देश मिलकर भारत के खिलाफ युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। चीन के सैनिक पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों में देखे गए हैं। इतना ही नहीं चीन के इंजीनियर पाकिस्तानी सेना के लिए बंकर तक सीमा पर तैयार कर रहे हैं। माना जा रहा है कि दो जिगरी दोस्त चीन और पाकिस्तान की वायु सेनाएं भारत को लक्ष्य करके ये अभ्यास कर रही है।

अब जेल से बाहर आएंगे इमरान खान, इस्लामाबाद हाई कोर्ट ने निचली अदालत का फैसला पलटा

इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) ने मंगलवार को तोशाखाना मामले में पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) के

अध्यक्ष इमरान खान की सजा को निलंबित कर दिया। आईएचसी ने एक दिन पहले सुरक्षित रखे गए संक्षिप्त फैसले की घोषणा कर दी। उसने अधिकारियों को पीटीआई प्रमुख को जमानत पर रिहा करने का निर्देश दिया। अदालत ने कहा कि वह बाद में जारी किए जाने वाले विस्तृत फैसले में सजा के निलंबन के कारणों का विवरण देगी। यह फैसला खान के लिए एक बड़ी कानूनी जीत है, जिन्होंने तोशाखाना मामले में अपनी दोषसिद्धि और दी गई सजा को चुनौती दी थी। इस महीने की शुरुआत में संघीय राजधानी में एक जिला और सत्र अदालत ने खान को राज्य उपहार भंडार से संबंधित भ्रष्ट आचरण का दोषी पाते हुए तीन साल की जेल की सजा सुनाई थी और 100,000 रुपये का जुर्माना लगाया था। इमरान खान का जेल में अच्छी तरह से ख्याल रखा जा रहा था। सारी लग्जरी सुविधा उन्हें दी जा रही थी। पाकिस्तानी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को हाल ही में बताया भी था कि इमरान खान को जेल में देशी घी में बने चिकन और मटन परोसे जा रहे हैं। इसके अलावा उन्हें एयर कूलर वाले जेल में रखा गया है।

तोशाखाना केस में सजा पर लगी थी रोक, अब दूसरे मामले में फिर गिरफ्तार हुए इमरान खान

इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) ने मंगलवार को तोशाखाना मामले में पीटीआई अध्यक्ष इमरान खान की तीन साल की सजा को निलंबित कर दिया। हालाँकि, आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के तहत मामलों की सुनवाई के लिए हाल ही में स्थापित एक विशेष अदालत ने अटक जेल अधिकारियों को निर्देश दिया है कि सिफर मामले में इमरान को न्यायिक लॉकअप में रखें और 30 अगस्त (कल) को इस संबंध में पेश करें। अटक जेल अधीक्षक को संबोधित एक पत्र में विशेष अदालत के न्यायाधीश अबुल हसनत मुहम्मद जुल्कारनैन ने कहा कि आरोपी इमरान खान नियाजी पुत्र इकरामुल्ला खान नियाजी निवासी जमान पार्क, लाहौर है। उपरोक्त वर्णित एफआईआर के मामले में न्यायिक रिमांड का आदेश दिया गया है, जो पहले से ही जिला जेल, अटक में बंद है। सिफर मामला एक राजनयिक दस्तावेज से संबंधित है जो कथित तौर पर इमरान के पास से गायब हो गया था। पीटीआई का आरोप है कि इसमें अमेरिका की ओर से इमरान को सत्ता से बाहर करने की धमकी दी गई थी। इसी मामले में पीटीआई के उपाध्यक्ष और पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरेशी के खिलाफ भी कार्यवाही चल रही है। तोशखाना मामले में बहुप्रतीक्षित आदेश की घोषणा आईएचसी की मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक और न्यायमूर्ति तारिक महमूद जहांगीरी की खंडपीठ ने पूर्व प्रधानमंत्री की जेल की सजा के खिलाफ अपील पर की थी।

न्यायमूर्ति फारूक ने कहा कि फैसले की प्रति जल्द ही उपलब्ध होगी... हम अब केवल यही कह रहे हैं कि (इमरान का) अनुरोध मंजूर कर लिया गया है। कानूनी मामलों पर पीटीआई अध्यक्ष के सहयोगी नईम हैदर पंजोथा ने भी एक्स पर एक पोस्ट में इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि सीजे ने हमारे अनुरोध को स्वीकार कर लिया है, सजा को निलंबित कर दिया है और कहा है कि विस्तृत निर्णय बाद में प्रदान किया जाएगा।

मलवाबर में शहीद हुए युवा क्रांतिकारियों को नमन : शाही

देवरिया। मलवाबर में 1942 के अमर शहीद रामलगन और रामानंद को श्रद्धांजलि देते हुए कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने कहा कि आजादी की लड़ाई में पथरदेवा क्षेत्र के हमारे पूर्वजों का योगदान रहा है। यहां के लोगों ने भारत छोड़ो आंदोलन में जमकर सहभागिता की थी। 28 अगस्त 1942 को इसी स्थान पर अंग्रेज पुलिस की गोली से दो नवयुवक शहीद हुए थे। इन शहीदों को मेरा नमन है। शहीद दिवस पर ग्राम पंचायत मलवाबर की ओर से अमर शहीद रामलगन और रामानंद के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। गोष्ठी को जिला कृषि अधिकारी मृत्युंजय सिंह, बीडीओ अनिल सिंह, प्रभात रंजन, कौशल विकास अधिकारी देवश्री शुक्ल, जिला आपूर्ति अधिकारी संजय सिंह, जिला कार्यक्रम अधिकारी कृष्णकांत अदि ने भी संबोधित किया। युवा कल्याण विभाग की ओर से 54 युवक मंगल दलों को खेल सामग्री की गई। इस दौरान डॉ. जितेंद्र प्रताप राव, नथुनी कुशवाहा, अवधेश कुमार सिंह, रमेश सिंह, रमायन साहनी सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

बैडमिंटन में अभिषेक और शालिनी चौंपियन

देवरिया। राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में संत विनोवा पीजी कॉलेज में दो दिवसीय बैडमिंटन एवं शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बैडमिंटन के पुरुष एकल वर्ग में अभिषेक ने सत्यम को 21–16 से, महिला एकल वर्ग में शालिनी ने रश्मि को 21–17 से पराजित कर खिताब अपने नाम किया। पुरुष युगल वर्ग में गोपाल यादव व शिवम यादव एवं महिला युगल वर्ग में नेहा तथा नीतू विजयी रहीं। इसके पूर्व बीआरडी पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रो. शरद चंद्र मिश्र ने खेल का शुभारंभ मेजर ध्यानचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। उन्होंने कहा कि यहां के विद्यार्थियों को भी मेजर ध्यान चंद्र जैसा खिलाड़ी बनने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अर्जुन मिश्र ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रतियोगिता के संयोजक क्रीड़ा प्रभारी डॉ. मंतोष मौर्य निर्णायक रहे।

दस लाख का सामान उठा ले गए चोर

देवरिया। रामपुर कारखाना थाना क्षेत्र के माधोपुर गांव में सूनसान पड़े एक घर को चोरों ने खंगाल दिया और करीब दस लाख रुपये का सामान उठा ले गए। परिवार पंजाब गया था। दो महीने बाद घर लौटने पर घटना की जानकारी हुई। इसके बाद पीड़ित ने पुलिस को तहरीर दी। पुलिस मौके पर पहुंच छानबीन की। माधोपुर गांव निवासी कपिल देव प्रजापति पंजाब में काम करते हैं। दो महीने पहले बेटे अमरजीत प्रजापति का वैवाहिक समारोह संपन्न हुआ। इसके बाद पूरा परिवार घर में ताला बंद कर पंजाब चला गया। सूनसान पड़े घर के ताले तोड़कर चोर करीब दस लाख रुपये का सामान उठा ले गए। सुबह पूरा परिवार पंजाब से घर पहुंचा तो घटना की जानकारी हुई। इंस्पेक्टर नरेंद्र प्रताप राय ने कहा कि मामला संज्ञान में है। मामले की जांच की जा रही है।

नेपाल भेजी जा रही 60 बोरी चीनी सहित पिकअप बरामद

महराजगंज। बरगदवा थाने की टीम देर रात नेपाल जा रही 60 बोरी चीनी सहित पिकअप बरामद किया है। बरामद चीनी और पिकअप को कार्रवाई के लिए कस्टम को सौंप दिया गया। सीमावर्ती गांव में हो रही तस्करी की सूचना पर पुलिस . देर रात नेपाल बॉर्डर के चकरार मोड़ के पास से पहुंची। एक पिकअप से 50 किलो की 60 बोरी चीनी के साथ को चालक को गिरफ्तार किया। पूछताछ में चालक अपना नाम रमेश निवासी किशुनपुर थाना कोतवाली ठूठीबारी बताया। बरगदवा पुलिस की इस कार्रवाई से तस्करों में हड़कंप मच गया। बरामद सामान को बरगदवा पुलिस ने कस्टम विभाग ठूठीबारी भेज दिया है। थानाध्यक्ष बरगदवा दिनेश कुमार ने बताया कि क्षेत्र में रात्रि गश्त बढ़ा दी गई है। तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए तेजी से काम किया जा रहा है। सूचना मिलने पर त्वरित कार्रवाई की जाती है। सशस्त्र सीमा बल के इंस्पेक्टर रघुनाथ प्रसाद ने बताया कि खनुआ बीओपी के जवानों ने गश्त के दौरान सूट 60, साड़ी 17, कॉटन कपड़ा 10 थान और तीन साइकिल और बलिराम यादव निवासी खनुआ थाना सोनौली को पकड़ा। हरदीडाली बीओपी के जवानों ने गश्त के दौरान मुर्दहिया घाट के पास यूरिया 11 बोरी, चावल 4 बोरी व दो साइकिल सहित अनिल वर्मा निवासी शैलदह उर्फ कवलदह थाना पुरंदरपुर को पकड़ा।

98 लाख ऋण दबाए बैठे हैं 79 उद्यमी, विभाग की बढ़ी मुश्किल

महराजगंज। ग्रामोद्योग विभाग की ओर से चलने वाली सीबीसी (कन्सोर्शियम बैंक क्रेडिट) ऋण योजना का बुरा हाल हाल है। इसके तहत कुल 151 लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में ऋण प्राप्त किया था, जिसमें से 72 ने ऋण चुकता कर दिया। शेष 79 लोगों की ओर से अब धन को जमा करने में रुचि नहीं ली जा रही है। अभी भी विभाग पर कुल 98 लाख का बकाया चल रहा है। सीबीसी ऋण योजना के तहत वर्ष 1995–96 से इच्छुक लोगों को कुम्हारी कला, अगरबत्ती निर्माण, डेयरी व ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित कार्यों के लिए ऋण उपलब्ध कराया गया। वर्ष 1997–98 तक योजना के तहत कुल 151 लोगों में 25 लाख 18 हजार 17 रुपये का ऋण वितरित किया गया। जिसमें से 72 लोगों ने 15 लाख 17 हजार 456 रुपये की धनराशि निर्धारित समयसीमा में जमा कर दी। शेष बचे 79 लोगों पर 10 लाख 561 रुपया मूलधन बाकी रह गया। इनकी ओर से ध्यान न दिए जाने से अब उनके बकाए धनराशि पर चक्रवृद्धि ब्याज लगा है, जिससे उनका बकाया बढ़कर 98 लाख, 35 हजार, 953 रुपये पहुंच गया है। **ऋण माफी के चक्कर में नहीं जमा हो रही धनराशि:** सभी 79 बकाएदारों को लगता है कि चुनावी वर्ष में उन्हें ऋणमाफी का लाभ मिल जाएगा, इसीलिए वे धन को जमा नहीं कर रहे हैं। विभाग ने बकाएदार सभी को 10 वर्ष पहले आरसी जारी कर दिया है, लेकिन इसके बाद भी धनराशि की वसूली करने में अमीन शिथिल हैं। **विभाग की ओर से मूलधन जमा करने की सहूलियत:** ग्रामोद्योग विभाग की ओर से ऋणियों से बकाए को जमा कराने के लिए समय–समय पर एकमुश्त समाधान योजना भी लाई गई। इसमें ऋणियों को सिर्फ अपने बकाए मूलधन को जमा करना था, लेकिन ऋणियों ने उसमें भी रुचि नहीं दिखाई। **विभाग के टाप फाइव बकाएदार:** विभाग की ओर से टाप फाइव बकाएदारों में जसबीर सिंह पर 1,97,900, अजय पांडेय पर 1,77,250, सुरेशचंद्र पर 1,75,402, परमजीत कौर पर 1,74,284 एवं संत सिंह पर 79,200 रुपये बाकी हैं।

मिठाई की दुकान में फटा सिलेंडर, दहल उठे आसपास के लोग

सलेमपुर। गैस सिलेंडर में रिसाव होने से लार में मिठाई की दुकान में आग लग गई। कुछ देर बाद सिलेंडर तेज आवाज के साथ फट गया। इससे आसपास के लोग दहल उठे। वहीं, दुकान के अंदर रखा तीन लाख से अधिक का सामान जलकर राख हो गया। लोगों की मदद से काफी प्रयास के बाद आग पर काबू पाया गया। घटना की जानकारी पर पहुंचे हल्का लेखपाल ने क्षति का आंकलन कर तहसील प्रशासन को रिपोर्ट दी।

लार के बौली वार्ड निवासी गोविंद मद्धेशिया की पिपरा चौराहे पर मिठाई की दुकान है। रोज की तरह दुकान पर रहने वाले कारीगर चाय बना रहे थे। इसी बीच अचानक सिलेंडर से रिसाव होने लगा और आग लग गई। धीरे–धीरे आग दुकान में रखे में वनस्पति घी में लग गई। इसके बाद आग तेज हो गई और दुकान में रखा सिलेंडर फट गया। चीख–पुकार की आवाज सुन दौड़े आसपास के लोगों ने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग की लपट के सामने बेबस दिखे। आग पर काबू पाने के लिए आसपास की दुकानों से अग्निशमन यंत्र भी लाए गए, लेकिन उससे आग पर नियंत्रण नहीं पाया जा सका। करीब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद लोगों ने नाली का पानी व आसपास में लगे नल का सहारा लिया। इसके बाद आग पर काबू पाया गया। मुख्य चौराहे पर आग लगने से अफरा तफरी का माहौल रहा। दुकान स्वामी के मुताबिक घटना में दुकान के अंदर रखे गए तीन फ्रीज, तीन क्विंटल चीनी, अस्सी किलो रिफाइंड सहित तीन लाख से अधिक का सामान जल कर राख हो गया। आग की खबर पाकर पहुंचे नायब तहसीलदार भागीरथी ने दुकान का निरीक्षण किया। हल्का लेखपाल अभिनव मिश्रा ने क्षति का आंकलन कर तहसील प्रशासन को रिपोर्ट दी।

बेमतलब साबित हुआ अग्निशमन यंत्र

आग से बचाव के लिए दुकानदारों ने अग्निशमन यंत्र लगवाए हैं। ताकि दुकान के अंदर आपात स्थिति में समय रहते उपयोग कर नुकसान होने से बचाया जा सके। लेकिन, हुई घटना के दिन यंत्र बेमतलब साबित हुए। दुकान स्वामी गोविंद मद्धेशिया के मुताबिक आग लगने के दौरान उन्होंने दुकान में लगा अग्निशमन यंत्र का प्रयोग कर आग पर काबू पाने की कोशिश की, लेकिन उससे निकलने वाला केमिकल आग पर अपना प्रभाव नहीं दिखा सका। जिसके बाद से आग की लपट और तेज हो गई।

घरेलू सिलेंडर का हो रहा व्यवसायिक उपयोग, आग रोकने का इंतजाम नहीं

देवरिया। शहर की घनी बस्तियों में धड़ल्ले से घरेलू रसोई गैस सिलेंडरों का दुकानों पर उपयोग किया जा रहा है। वहीं, इन दुकानों पर आग बुझाने के इंतजाम भी नहीं हैं। कोतवाली रोड पर छोला–भटूरा की दुकान पर घरेलू गैस सिलेंडर का उपयोग हो रहा था। निबंधन कार्यालय के पास पांच जगहों पर दुकानों के काउंटर के नीचे रखकर चूल्हा जलाया जा रहा था। सिविल लाइंस रोड पर 16 जगहों पर सिलेंडर का उपयोग करते हुए देखा गया। रेलवे स्टेशन रोड पर करीब 20 जगहों पर, इतना ही नहीं जिस जगह पर भीषण आग लगी थी उसके इर्द–गिर्द कई दुकानों पर सुरक्षा मानकों की अनदेखी कर उपयोग किया जा रहा है। ऐसे लोगों के खिलाफ अग्निशमन विभाग की कार्रवाई भी नहीं हो रही है।

लाल निशान से 1.12 मीटर ऊपर पहुंची सरयू

बरहज। नेपाल देश से छोड़े गए तीन लाख क्यूसेक पानी से सरयू और राप्ती नदी में बाढ़ आ गई है, जिससे तटवर्ती गांवों के लोगों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। सरयू नदी खतरे के निशान 66.50 से 1.12 मीटर ऊपर 67.62 मीटर पर बह रही है। जबकि भदिला प्रथम और गोरखपुर जनपद का कोलखास गांव मैरुंड हो गया है। नदी के उफनाने से परसियां–विशुनपुर देवार गांवों के लोगों की दुश्वारियां बढ़ गईं हैं।

पिछले करीब एक पखवारे से नदी के जलस्तर में निरंतर बढ़त दर्ज की जा रही है। सरयू कटइलवा से कपरवार संगम तट, दियारा के पीडब्ल्यूडी बांध, जबकि राप्ती महेन–मोहरा तटबंध पर दबाव बना रही है। नदी का पानी परसियां देवार के आधा दर्जन और विशुनपुर देवार के करीब आठ मोहल्लों तक पहुंच गया है। आई बाढ़ से भदिला प्रथम, कोलखास, परसियां–विशुनपुर देवार के कल्लहिया, चौहान बस्ती, भर टोला, पुरानी बस्ती, जरलहवा, दसरसरिया आदि टोलों तक नदी का पानी पहुंच गया है। वहीं नगर के जहाज घाट स्थित पटेल नगर में नाली–नालों के रास्ते नदी का पानी सड़क तक पहुंच गया है। नदी के बढ़त बनाने को लेकर लोगों की नींद उचट गई है। बंधों के निकट के गांवों के लोग रतजगा करने पर विवश हैं। बाढ़ खंड विभाग के सहायक अभियंता अशोक द्विवेदी ने बताया कि 18 घंटे से नदी का जलस्तर स्थिर थमा है। बंधों की लगातार निगरानी कराई जा रही है।

एसडीएम ने किया कटान का निरीक्षण

बरहज। सरयू नदी पार परसियां–विशुनपुर देवार में पीडब्ल्यूडी बांध पर हो रही कटान का एसडीएम अवधेश कुमार निगम ने निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधितों को कटान रोधी कार्य कराने का निर्देश दिया। परसियां देवार के दसरसरिया मोहल्ले के निकट पीडब्ल्यूडी बांध पर नदी दबाव बना रही है। जबकि कुछ जगहों पर कटान हो रहा है। जानकारी होने पर एसडीएम, नायब तहसीलदार जितेंद्र सिंह, मदनमोहन पाठक आदि के साथ परसियां देवार पहुंचे। गांव के शंकर प्रसाद, विजय कुमार, दिनेश कुमार, छोटेलाल, बलवंत सिंह, सुभाष यादव, सुरेंद्र यादव, रामाश्रय सिंह आदि का कहना है कि नदी कुछ टोलों में लोगों के घरों तक पहुंच गई है। बांध के कटने से परसियां–विशुनपुर देवार के 52 टोलों में तबाही मच सकती है। लोगों का यह भी कहना है कि स्वयं के भोजन की सांसत के साथ–साथ पशुओं के निवाले का संकट गहरा गया है। लोगों ने संक्रामक बीमारियों के फैलने की भी आशंका जताया है। एसडीएम अवधेश कुमार ने बताया कि बांध का निरीक्षण किया गया है। कटान क्षेत्र को दुरुस्त कराने के लिए निर्देशित किया गया है।

ननिहाल आए बालक की कुएं में डूबने से हुई मौत

महाराजगंज । नौतनवा थाना क्षेत्र के चमैनिया उर्फ भेड़ही के टोला नौडिहवा में देर रात अमन चौहान (05) की कुआं में डूबकर बेहोश हो गया। बनकटी सीएचसी में जांच के बाद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बालक अपनी मां के साथ ननिहाल आया था। भैसहिया निवासी सुनीता चौहान अपने इकलौते बेटे अमन को लेकर शनिवार को मायके नौडिहवा आई थी। नाना सुग्रीव ने बताया कि अमन घर के बच्चों के साथ खेल रहा था। देर शाम घर में नहीं दिखने पर उसे खोजने लगे। पूरे गांव में ढूंढा गया, लेकिन उसका पता नहीं चला। चार वर्षीय दूसरे नाती ने तोतली आवाज में कुआं में गिरने का इशारा किया। वहां जाकर देखा गया तो अमन कुएं में डूबा हुआ था। उसे लेकर अड्डा और गजरहा प्राइवेट चिकित्सकों के पास पहुंचा। वहां से रेफर होने पर बनकटी सीएचसी ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। रात में ही शव उसके घर भैसहिया ले जाया गया। पहला बेटा पैदा होने के बाद तो कूएं में डूबकर मर गया: अड्डा बाजार। नौतनवा थाना क्षेत्र के चमैनिया उर्फ भेड़ही के नौडिहवा में ननिहाल आए अमन की कुएं में डूबकर मौत हो गई।

उपजिलाधिकारी ने सीएचसी गोला व बड़हलगंज का किया औचक निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोला,गोरखपुर। शासन के निर्देश पर सोमवार की रात में टीम के साथ सीएचसी गोला व बड़हलगंज का औचक निरीक्षण किया।अस्पताल पर एसडीएम व टीम को पहुंचते ही सभी के बीच

में करौली मच गई।इस दौरान डॉ एजाज अहमद फार्मासिस्ट चन्द्रकेश स्टॉप नर्स सुमन राय इंद्रावती देवी की उपस्थित मिली।ईटीसी वार्ड में 1 मरीज भर्ती मिला। साफ सफाई ब्यवस्था की सन्तोषजनक पाया। दवाओं का भौतिक सत्यापन भी रेंडम आधार पर हुआ। स्टॉक रजिस्टर में एक्सपायरी दवाओं का अंकन किया गया था। मौके पर एन्टी स्नैक वेनम की 18 वायल व एन्टी रैविज वैक्सीन की 120 वायल दवा स्टॉक में उपलब्ध मिला। निरीक्षण करने के बाद सीधे एस डी एम अपने टीम के साथ सी एच सी गोला पर 10 बजकर 45 मिनट पर पहुचे।मौके पर अधीक्षक डॉ अमरेन्द्र नाथ ठाकुर डॉ आर पी यादव फार्मासिस्ट विजय श्रीवास्तव स्टाफ नर्स गायत्री मिश्रा उपस्थित थे।ईटीसी वार्ड में कोई मरीज भर्ती नही मिला। जननी सुरक्षा वार्ड में 28 अगस्त को एक डिलीवरी कराई गई थी। मरीज के अभिभावक से पूछ ताछ की गई।अभिभावक ने बताया कि दवाएं अस्पताल से ही उपलब्ध हुई है। दवाओं का सत्यापन भी रेंडम आधार पर किया गया।स्टॉक रजिस्टर भी एस डी एम द्वारा देखा गया ।एक्सपायरी दवाओं का अंकन किया गया था। मौके पर एन्टी स्नेक वेनम की 25 वायल और एन्टी रैविज वैक्सीन की 75 वायल दवा मिला। एस डी एम गोला द्वारा दोनों सी एच सी की जांच रिपोर्ट जिलाधिकारी कार्यालय में मंगलवार को भेज दी गयी। निरीक्षण टीम में नायब तहसीलदार जयप्रकाश स्टेनो अनूप सिंह सहित आदि शामिल रहे।

सपनों को पंख लगाता: एस बी टी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गौरी बाजार,देवरिया। बात उस समय की है, जब मैं सिंगापुर रहता था और अपने पैतृक गांव बखरा आया हुआ था। मैं कुछ करने के विचार से आया था लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कहां से करूं। मैं एक दिन किसी काम से गोरखपुर जा रहा था, तभी गांव से बाहर मुझे कुछ लड़के और लड़कियां मिले। मैंने अचानक उन्हें रोककर पूछा कि आप लोगों की पढ़ाई कैसी चल रही है। उनमें से एक लड़की ने जो बात कही कि वह पढ़ाई करना चाहती है तथा डॉक्टर बनना चाहती है, लेकिन उस तरह का कोई स्कूल इस ग्रामीण क्षेत्र में नहीं है। उनके माता–पिता भी दूर शहर पढ़ने के लिए नहीं भेज सकते, जिससे उनके सपने पूरा हो सके। मैंने उसी दिन उस लड़की और अपने क्षेत्र के हर पढ़ने वाले छात्र छात्राओं के सपने को पूरा करने का दृढ़ निश्चय किया। हमारे पितामह जो कि बखरा इंटर कॉलेज के संस्थापक सदस्य व प्रधानाचार्य रहे,उन्होंने जब मेरे इस निर्णय को जाना तो बहुत खुश हुए तथा अपनी इच्छा जाहिर करते हुए उन्होंने बताया कि बेटा तुमने मेरे मन की बात जान ली। मेरी भी इच्छा है कि इस ग्रामीण अंचल में एक ऐसा विद्यालय खुले जो यहां के लोगों के लिए वरदान साबित हो। मैंने अपने विचार और बाबा जी की इच्छा को मूर्त रूप देने के लिए कुछ स्वजनों के सहयोग से सन् 2014 में एसबीटी नाम से गौरी हाटा रोड, बिशनपुरा, बखरा में एक विद्यालय की नींव रखी तथा इस विद्यालय को उस समय में उच्च शिक्षण तकनीकी से जोड़ा तथा अपने क्षेत्र व समाज के भविष्य को संवारने का काम शुरू किया।विद्यालय की शुरुआत 551 बच्चों के साथ कक्षा नर्सरी से कक्षा आठवीं तक की गई। फिर धीरे–धीरे हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की कक्षाएं चलने लगी।गौरी बाजार के ग्रामीण क्षेत्र का पहला विद्यालय एस बी टी पब्लिक स्कूल था, जिसे सीबीएसई बोर्ड दिल्ली द्वारा इंटर की अंग्रेजी माध्यम से मान्यता प्राप्त हुई।आज विद्यालय से हर साल होनहार व मेधावी बच्चे निकल रहे हैं जो

देश विदेश में जाकर अपना तथा परिवार के साथ–साथ विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। विद्यालय परिवार उन सभी अभिभावकों व प्रबुद्धजनों का ऋणी है जिन लोगों ने एसबीटी पर अपना भरोसा जताया तथा अपने पाल्यों को विद्यालय में आधुनिक व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा। सन् 2017 में विद्यालय द्वारा महिलाओं को जागरूक करने हेतु भ्रूण हत्या पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया और उस कार्यक्रम के समय हमने निर्णय लिया कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना को मूर्त रूप देते हुए हर लड़की के प्रवेश शुल्क में विशेष छूट प्रदान करने की व्यवस्था की जाएगी। जिसका लाभ क्षेत्र के सभी लड़कियों को मिलेगा और यह कार्य आज भी सतत् रूप से हर लड़की के मदद में चल रहा है।इसी प्रकार सन् 2021 में महिला सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम का आयोजन भी विद्यालय द्वारा कराया गया। जिससे इस ग्रामीण क्षेत्र की सभी महिलाओं व लड़कियों को उनके सुरक्षा, अधिकार व स्वयं की रक्षा करने हेतु प्रेरित किया गया। विद्यालय द्वारा नक्षत्र शाला का भी आयोजन किया गया जो विद्यालय के बच्चों के साथ–साथ क्षेत्र के बच्चों व बड़े बुजुर्गों को भी दिखाया गया, जिससे इस ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को भी सौरमंडल के ज्ञान से ओतप्रोत कराया गया। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए विद्यालय द्वारा इंटरमीडिएट के छात्र छात्राओं को आईआईटी व पी एम टी की परीक्षाओं हेतु विषय विशेषज्ञों को बुलाकर विशेष शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिससे यहां के छात्र छात्राओं को इंजीनियर और डॉक्टर बनने के लिए दूर शहरों में न जाना पड़े तथा जो सपना आज से 10 साल पहले यहां इस ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों ने देखा था वह सपना पूरा हो सके। इतना ही नहीं, अपनी आधुनिक शिक्षण तकनीकी के कारण कोरोना काल में भी एसबीटी विद्यालय ने अपनी शिक्षण व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किया। जिस समय बहुत से विद्यालय बंद हो गए तथा अधिकांश विद्यालय अपनी शिक्षण व्यवस्था में असफल रहे।उस समय एसबीटी ने इंटरनेट के माध्यम से कक्षाओं का सजीव प्रसारण किया तथा बच्चों से जुड़ा रहा और उनकी समस्याओं का समाधान भी घर बैठे ही किया। जिसका परिणाम यह रहा कि लगभग दो साल तक वैश्विक महामारी से जूझते हुए भी इस क्षेत्र के बच्चे शिक्षण से जुड़े रहे। समय समय पर विद्यालय द्वारा बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाता है ताकि विद्यालय में स्वस्थ शिक्षा के साथ–साथ स्वस्थ शरीर का भी निर्माण हो सके। हमारा उद्देश्य यह है कि जो भी बच्चे इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करें,उनका सर्वांगीण विकास हो सके। विद्यालय का उद्देश्य भविष्य में ऐसे डॉक्टर ,इंजीनियर, वकील, विद्वान पैदा करना है,जो इस क्षेत्र के साथ–साथ एस बी टी का नाम रोशन करें। विद्यालय आगे भी अपनी शिक्षण तकनीकी में और भी सुधार करते हुए हमेशा नई शिक्षण पद्धति और ज्ञान देने के लिए कटिबद्ध है। साथ ही संस्कारी व स्वस्थ शिक्षा देने के प्रति उत्तरदायी है। मैं आप सभी क्षेत्रवासियों तथा प्रबुद्धजनों का आभार प्रकट करता हूं। धन्यवाद।

छपवा टोल प्लाजा पर अवैध वसूली का वीडियो वायरल

नौतनवां। गोरखपुर–सोनौली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर छपवा स्थित टोल प्लाजा बूथ पर ट्रक चालकों से टोल कर्मी द्वारा झोले में रखे हैंडल मशीन से पर्ची काटकर अवैध वसूली करने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मामले में टोल प्लाजा प्रबंधक ने तीन कर्मचारियों को निकालने का मामला भी प्रकाश में आया है। छपवा टोल प्लाजा पर जुलाई माह से मेरठ की कंपनी देवेंद्र कुमार का ठेका है। बताया जा रहा है कि टोल मैनेजर के निर्देशानुसार टोल पर आने वाले वाहनों से अवैध वसूली का खेल चल रहा है। यह वीडियो तब वायरल हुआ, जब टोल प्लाजा से तीन कर्मचारियों को निकाल दिया गया। वायरल वीडियो में साफ तौर पर दिख रहा है कि एक कर्मी टोल बूथ के बगल में डिवाइडर के बीच बैठकर झोले में रखे हैंडल मशीन से पर्ची काटकर ट्रक चालक को दे रहा है। ट्रक चालकों को मिली पर्ची में 260 रुपये प्रिंट हुआ है। मजे की बात है कि पूरा टोल प्लाजा परिसर सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में है, उसके बाद भी अवैध वसूली की जा रही है। वाहन चालकों के मुताबिक ओवर लोडिंग दिखाकर जबरन अवैध वसूली की है। जबकि टोल प्लाजा पर वजन करने के लिए कांटा नहीं लगा हुआ है। बड़ी बात तो यह है कि मशीन द्वारा निकाली गई रसीद नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट पर अपलोड तक नहीं होता अर्थात वसूल की गई धनराशि सीधा ठेकेदार के जेब में जाती है।

सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो को देखने के बाद टोल के ठेकेदारों ने अपने दो कर्मचारियों को तत्काल टोल की गोपनीयता भंग करने का आरोप लगाते हुए हटा दिया। इसके बाद निलंबित कर्मचारी सुफियान अंसारी ने बताया कि हम टोल कर्मचारी हैं, पिछले चार महीना से कार्य कर रहे थे। इस समय देवेंद्र शर्मा का ठेका है, उनके द्वारा बताया जाता था कि हैंडल मशीन से रसीदों को प्रिंट करो तो हमारे द्वारा किया जाता था और यदि हम कार्य करने से मना करते थे तो हमें नौकरी से निकालने की धमकी भी दी जाती थी, जब वीडियो वायरल हुआ तो हम पर आरोप लगाते हुए हमें टोल से निष्कासित कर दिया गया है। टोल प्लाजा के कर्मचारी दुर्गेश यादव ने बताया कि वह पिछले एक वर्ष से अधिक समय से टोल पर कम कर रहे हैं। इस समय देवेंद्र शर्मा की कंपनी ठेका चला रही है। हमने उनके कहने के अनुसार सुचारू रूप से कार्य किया, इसके बावजूद भी बिना किसी कारण को बताएं हमें नौकरी से निकाल दिया गया है। ट्रक वाहन चालक संतोष मौर्य ने बताया कि वह अपने गाड़ी में कोयला लादकर नेपाल जा रहे हैं। उनकी गाड़ी को ओवरलोड बता कर टोल कर्मचारियों द्वारा 260 रुपए की जबरिया वसूली की गई है। वहां पर इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी नहीं लगा है फिर भी मनमाने तौर से पैसा वसूल रहे हैं। शैलेश यादव ट्रक चालक ने बताया कि वह आजमगढ़ से सामान लाद कर पड़ोसी राष्ट्र नेपाल जा रहे हैं छपवां टोल प्लाजा पर स्थित टोल कर्मियों द्वारा हमारी गाड़ी में ओवरलोड बात कर 260 रुपये की वसूली किए हैं और रसीद भी नहीं दिए हैं।

ट्रक चालक मनोज यादव ने बताया कि वह बनारस से गाड़ी लेकर आ रहे हैं और छपवा टोल प्लाजा पर बिना इलेक्ट्रॉनिक कांटा लगाएं हमारी गाड़ी को ओवरलोड बताने लगे इस पर जब हमने बहस किया तो उन्होंने बिल्टी पेपर मांगा इसके आधार पर उन्होंने 50 किलो ज्यादा वजन होने का हवाला देते हुए ओवरलोड का चार्ज 260 रुपये काट दिए हैं।

जिला पोषण मिशन समिति के कार्यों का जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने कलेक्ट्रेट सभागार में ''पोषण अभियान'' की जनपद स्तरीय पोषण कन्वर्जेन्स सम्बन्धी बैठक की, बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि जिले के विकास व स्वस्थ्य समाज के लिए बच्चों का स्वस्थ्य होना जरूरी है, कुपोषण मुक्त गांव की संकल्पना के साथ ही अधिकारियों को गांव के हिसाब से कार्य आवंटित किये गये हैं, उन्हेंने कहा कि गांवों को शत–प्रतिशत कुपोषण मुक्त बनाये जाने हेतु प्रभावी कदम उठायें जाये, इस दौरान जिलाधिकारी ने 0–3 माह व 6 माह से 3 वर्ष के बच्चों के पोषण टैकर ऐप पर बच्चों के वजन की फीडिंग की प्रगति की समीक्षा की और सम्बन्धित बाल विकास परियोजना अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि पोषण टैकर ऐप पर बच्चों के वजन फीडिंग का कार्य बेहतर ढंग से निगरानी की जाये और समय–समय पर आंगनबाड़ी केन्द्रों पर जाकर बच्चों के वजन का परीक्षण भी किया जाये। इसी प्रकार से जिलाधिकारी ने बी0एच0एन0डी0 की बैठक रोस्टर सेशन के अनुसार किये जाने व पोषण अभियान के तहत किये जा रहे कार्यों की मानीटरिंग बेहतर ढंग से किये जाने हेतु जिला कार्यक्रम अधिकारी व समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारी को निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी खण्ड विकास अधिकारी अपनी विकास खण्ड क्षेत्रों में बी0एच0एन0डी0 की बैठक रोस्टर सेशन कराने की कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे और बेहतर ढंग से मानीटरिंग भी करेंगें, इस दौरान

जिलाधिकारी ने उपस्थित बाल विकास परियोजना अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पोषण अभियान के तहत कराये जा रहे कार्यों की बेहतर ढंग से मानीटरिंग करना सुनिश्चित करें, जिन बाल विकास परियोजना अधिकारियों द्वारा पोषण अभियान के तहत मानीटरिंग व निरीक्षण के कार्यों में शिथिलता बरती जायेगी तो उनकी जिम्मेदारी तय करते हुए उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उन्होंने कहा कि सैम–मैम बच्चों समय पोषाहार व दवाएं उपलब्ध करायी जाये और उनके स्वास्थ्य का समय–समय पर परीक्षण भी कराया जाये, जिससे कि वह जल्द से जल्द स्वास्थ्य हो सके सके। इस दौरान जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी व जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों का आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत 18 बिन्दुओं के अनुरूप प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित किया जाये, आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत आंगनबाड़ी केन्द्रों के सौन्दर्यीकरण के कार्य की प्रगति में शिथिलता पाये जाने पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए जिला पंचायत राज अधिकारी व जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सौन्दर्यीकरण के कार्य में तेजी लायी जाये अन्यथा की दशा में सम्बन्धित के विरूद्ध कार्यवाही हेतु शासन को पत्राचार सुनिश्चित किया जायेगा। बैठक में इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 अश्वनी कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी नवीन कुमार पाठक, ए0सी0एम0ओ0 डॉ0 आर0जी0 यादव, जिला पंचायत राज अधिकारी श्री विशाल सिंह, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांधु शेखर शर्मा, जिला कार्यक्रम अधिकारी राजीव सिंह, खण्ड शिक्षा अधिकारीगण, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर आयोजित हुए विविध कार्यक्रम

हॉकी के महान जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती पर आयोजित गोष्ठी में डाला गया प्रकाश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। खेल निदेशालय उ०प्र० लखनऊ के निर्देशानुसार

राष्ट्रीय खेल दिवस के शुभ अवसर पर खेल सप्ताह दिवस मनाये जाने हेतु निर्देशित किया गया था जो बीते 21 अगस्त से 29 अगस्त, तक मनाया गया। मंगलवार को हॉकी के महान जादूगर स्व० मेजर ध्यान चन्द जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर 14 वर्षीय जनपद स्तरीय वालक हाकी प्रतियोगिता का आयोजन जिला खेल कार्यालय सोनभद्र द्वारा विशिष्ट स्पोर्टस स्टेडियम तियरा रावर्टसगंज में किया गया इस प्रतियोगिता का उदघाटन आज के मुख्य अतिथि सांसद राज्य सभा रामसकल के द्वारा हॉकी के महान जादूगर स्व०मेजर ध्यान चन्द जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पीत कर तथा खिलाडियों से परिचय प्राप्त कर किया गया। हाकी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला नव ज्योति इण्टर कालेज एवं स्टेडियम एकादश के मध्य खेला गया, जिसमें नव ज्योति इण्टर कालेज ने स्टेडियम एकादश को 5–3 से परास्त कर विजेता हुयी। प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण क्रमशः वालीबाल, फुटबाल, एथलेटिक्स एवं हाकी के विजेता एवं उपविजेता खिलाडियों को मुख्य अतिथि माननीय रामशकल सांसद महोदय द्वारा वितरित किया गया । माननीय ने अपने उदबोधन में ध्यान चन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुये खिलाडियों को लगन एवं उत्साह के साथ खेलने के लिए प्रेरित किये। मैच में निर्णायक की भूमिका में अमरजीत यादव, दीपक गुप्ता, सुमित, आकाशदीप, धीरज, अभिषेक ने निभाया। इस मौके पर हाजी नूरूदीन खान फुटबाल संघ उपाध्यय, सोनभद्र, मोहम्मद अहमद खान (नूर) जिला फुटबाल सचिव सोनभद्र श्री बलराम .ष्ण यादव सचिव जिला तीरंदाजी संघ सोनभद्र, जयशकर भारद्वारा, कन्हैया पाण्डयेसूनील एथलेटिक्स कोच, रितेश दास फुटबाल कोच, सुमंगला शर्मा, तीरंदाजी कोच, सुवाष वालीबाल कोच आदि खेल प्रेमी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों व खिलाडियों का धन्यवाद ज्ञापित क्रीड़ा अधिकारी डी०पी०सिंह द्वारा किया गया।

सावन की बरसे बदरिया भोले शंकर की नगरिया, भजन संध्या में झूमे श्रद्धालु

वीरेश्वर मंदिर पर हुआ भव्य भजन संध्या का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। जिला मुख्यालय राबर्ट्सगंज सिविल लाइन रोड पर स्थित वीरेश्वर महादेव मंदिर पर सावन के आखिरी सोमवार के अवसर पर पुजारी राजकुमार पांडे के संयोजन में जय मां गायत्री

ग्रुप द्वारा देर शाम भजन संध्या का आयोजन कराया गया जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायक सूरज गुप्ता व मिर्जापुर से आए सुप्रसिद्ध भजन गायक ओंकार विश्वकर्मा ने भगवान भोलेनाथ के सावन में गाए जाने वाले एक से बढ़कर एक कजरी व भजनों का गायन किया। गायक सूरज गुप्ता ने जैसे ही सावन की बरसे बदरिया भोले शंकर नगरिया भजन का गायन प्रारंभ किया तो वहां उपस्थित भक्त भजन की धुन पर झूमने लगे और भोले नाथ की जयकारे से पूरा मंदिर प्रांगण गुंजयमान हो गया। तो वही भजन गायक ओमकार विश्वकर्मा ने का लेके शिव के मनाई हो शिव मानत नाही, भजन का गायन किया। भजन गायको के साथ आगर्न पर नागेंद्र दुबे, ढोलक पर अखिलेश विश्वकर्मा, बैंजो पर सुनील पटेल व ऑक्टोपैड पर अनिल ने संगत किया। इसके पूर्व पुजारी राजकुमार पांडे द्वारा मंदिर में स्थापित वीरेश्वर महादेव की झांकी सजाई गई और मंदिर में स्थापित शिवलिंग का दिव्य श्रृंगार कर भव्य आरती उतारी गई। इसके पश्चात मंदिर परिसर में आयोजित विशाल भंडारे में सैकड़ो श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर रामशंकर शुक्ला, राहुल, कौशल दूबे, निलेश पांडेय, अमित चौबे, सचिन जयसवाल, मोनू, प्रेमनाथ मिश्र देवानंद, प्रथम यादव, सर्वेश तिवारी, केतन, हिमांशु, अवधेश, आत्मानंद पांडेय, आशुतोष, अभिषेक, दादे चौबे, रजनीश कुमार गुप्ता, गोलू गुप्ता सहित अन्य लोगों उपस्थित रहे।

अटेवा ने सांसद के द्वार पर घन्टी बजा कर की पेंशन बहाली की मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर एनएमओपीएस व अटेवा पेंशन बचाओ मंच से जुड़े सैकड़ों पेंशन विहीन कर्मचारी जिलाध्यक्ष राजकुमार मौर्य के नेतृत्व में सोनभद्र से सांसद पकौड़ी लाल कौल के कार्यालय पर पहुँचे। जहाँ शिक्षक, कर्मचारियों ने घण्टी बजाओ अभियान के तहत पुरानी पेंशन योजना लागू करने का ज्ञापन दिया। इस दौरान सांसद ने कार्यालय से बाहर आकर कर्मचारियों की बात सुनी व ज्ञापन लिया। सांसद पकौड़ी लाल कौल ने कहा कि यह एक गम्भीर मुद्दा है अतः वह इस बात को माननीय प्रधानमंत्री के समक्ष अवश्य रखेंगे। इस दौरान लल्लन सिंह ने कहा कि अर्धसैनिक बलों को पुरानी पेंशन न देना कौन सा राष्ट्रवाद है। उन्होंने कहा कि पुरानी पेंशन हमारा संवैधानिक हक़ है और हम इसे लेकर रहेंगें। सुनील राव ने बताया कि 1 अक्टूबर को दिल्ली में पेंशन शंखनाद रैली है जो शिक्षक कर्मचारियों के इतिहास में अब तक की सबसे विशाल रैली होने जा रही है। सुबोध सिंह ने कहा कि पुरानी पेंशन न देकर सरकार कर्मचारियों के साथ छल कर रही है और कर्मचारियों की हर मांग को अनसुना कर रही है। अतः आने वाले चुनाव में सरकार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। सुरेंद्र नाथ वर्मा ने कहा कि आज देश के तमाम राज्यों में पुरानी पेंशन के मुद्दे पर सरकारें चुनी जा रही हैं और आगे के चुनावों में जो भी पक्ष पुरानी पेंशन बहाली की बात करेगा वही प्रदेश व देश में राज करेगा। पेंशन विरोधी सरकारों को सत्ता से उखाड़ फेकेंगे। रामगोपाल यादव ने कहा कि आज वर्तमान में प्रत्येक चुनाव में पुरानी

पेंशन की बहाली के निर्णय पर सत्ता का फैसला हो रहा है आने वाले चुनावों में ये और निर्णायक साबित होगा। अंत में अटेवा जिलाध्यक्ष राजकुमार मौर्य ने बताया कि अटेवा कई सालों से पुरानी पेंशन बहाली की मांग कर रहा है।आज प्रधानमंत्री से ज्ञापन के माध्यम से मांग की गई है कि देश के पाँच राज्यों राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, पंजाब और हिमाचल में पुरानी पेंशन बहाल हो चुकी है। घन्टी बजाओ कार्यक्रम में सूर्यप्रकाश सिंह, बबिता सिंह, कमलेश सिंह, सर्वेश तिवारी, राधेश्याम पाल, उमा सिंह, शैलेंद्र सिंह,राजकुमार उपाध्याय, रुद्र मिश्रा, गोपाल सिंह कुशवाहा, दिनेश दुबे, प्रेमसिंह पटेल, मनीष, रमाकांत, उमाशंकर, रणविजय, प्रवीण, दद्दन, अमन, मनोज, संजय, गोपाल सिंह कुशवाहा, अरुण तिवारी सहित सैकड़ों शिक्षक, कर्मचारी मौजूद रहे।

इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी शाखा की बैठक सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी शाखा सोनभद्र की बैठक अपर जिला अधिकारी सोनभद्र न्यायिक सुभाष चंद्र यादव के अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें रेडक्रास के चेयरमैन डॉक्टर आर एस सिंह, वाइस चेयरमैन विमल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष किशोरी सिंह, सदस्य अमित चंदेल, रेडक्रास के सरकारी सचिव डॉ सुमन कुमार के साथ मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय शुक्ला, .धा स्पीच थेरेपी के डॉ विशेशर चौहान व अन्य विभागों के लोगों ने भाग लिया। जिसमें निर्णय हुआ कि जनपद के मेडिकल एसोसिएशन के सभी लोगों को आजीवन सदस्य बनाया जाए, अन्य संस्था के लोग भी इसमें अधिक से अधिक सदस्य बने,साथ ही प्राइवेट चिकित्सालयों के अध्यक्ष को कहा गया की सभी चिकित्सालयों के चिकित्सक एवम मालिक रेड क्रॉस के मेंबर बने। जिससे सेवा कार्य अधिक से अधिक किया जा सके। जो भी आजीवन सदस्य बनेंगे, उन्हें इंडियन रेडक्रास के रेड कलर का प्लस का निशान लगाने का उन्हें अधिकार प्राप्त होगा।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

सेन्ट थामस स्कूल मे धूमधाम से उत्सव के रूप मनाया गया ओनम एवं रक्षाबंधन त्यौहार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शोहरतगढ़,सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत शोहरतगढ़ के टीचर्स

कालोनी गड़ाकुल मे स्थित सेन्ट थामस स्कूल मे मंगलवार 29 अगस्त को केरल का प्रमुख त्यौहार ओनम और पूरे भारत मे मनाये जाने वाला त्यौहार रक्षाबंधन बडे धूमधाम से उत्सव के रूप मे मनाया गया। कार्यक्रम मे स्कूल के बच्चो द्वारा सांस्तिक प्रस्तुति किया गया कार्यक्रम मे कार्ड मेकिंग कम्पटीशन, लावर कारपेट कम्पटीशन बच्चो द्वारा कराया गया। जिसमे जूनियर सेक्शन मे प्रियांशी तथा प्राइमरी सेक्शन मे पूनम गौतम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।बुशरा फातिमा,महाम ने द्वितीय तथा अस्फिया, सृष्टि ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थानाध्यक्ष शोहरतगढ पंकज कुमार पाण्डेय ने स्कूल के बच्चे, प्रिन्सिपल, अध्यापक, सभी लोगो की प्रशंसा किये। बच्चो के अभिनव की सराहना किये। सेन्ट थामस के. जी. पी. ए.ट्रस्ट के संस्थापक गंगाधर पाणिक्कर, इन्दिरा पाणिक्कर, प्रधानाचार्य डा0 सिन्नी पाणिक्कर, प्रबन्धक गिरीश पाणिक्कर, वरिष्ठ अध्यापक सुधीर दत्त ने कार्यक्रम को संबोधित किये। कार्यक्रम मे स्वर्णिम, साक्षी, प्रियांशी, अन्नया और अनुष्का ने मनमोहक प्रस्तुति दी। इस दौरान ताइक्वांडो के प्रशिक्षक के साथ स्कूल की शिक्षको मे सिम्मी खान, आंचल, प्रियंका, सहाना, संगीता तिवारी, सचिन, रियाज अहमद आदि के साथ स्कूल के बच्चे मौजूद रहे।

स्कूल की छात्राओं ने जवानों को रक्षाबंधन बांधकर मिठाइयां खिलाई

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। देश की सीमाओं पर तैनात जवानों के चेहरे पर

रक्षाबंधन पर अपनों से दूर रहने के कारण उदासी ना आए और उनकी कलाई सूनी ना रहे इसलिए शहर के पकड़ी चौराहे पर स्थित शेमफोर्ड यूचरिस्टिक स्कूल की छात्राओं के द्वारा स्वनिर्मित राखी सुरक्षा बल के जवानों को बांधकर उन्हें मिठाइयां खिलाई। जवानों के तरफ से सुरक्षा का भरोसा दिया गया साथ ही साथ सीमा सुरक्षा बल के डिप्टी कमांडेंट शक्ति सिंह ने बच्चों से बात कर कहा कि वह किसी भी समय बेझिझक उन्हें अपनी समस्या बता सकते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य वैभव वांटू कहा कि यदि विस्तृत नजरिये से देखा जाए तो यह त्योहार केवल एक पारिवारिक और धार्मिक त्योहार के अलावा एक सामाजिक भी है इस अवसर पर वैभवी, हबसा, अदिति अनाया, श्वेता यादव, वेदांत गोयल व विद्यालय के शिक्षक अमित कुमार मिश्रा, पल्लवी सिंह, निशा त्रिपाठी एवं निकहत आदि मौजूद रहे।

कमर दर्द की समस्या से हमेशा रहते हैं परेशान ? अपने आहार में जरूर शामिल करें ये 6 चीजें

कमर में दर्द होना आजकल एक आम समस्या हो चली है. इन दिनों ज्यादातर लोग पीठ दर्द की समस्या का सामना कर रहे हैं. ऑफिस में घंटों–घंटों बैठकर काम करने और गलत पोजिशन में बैठने की वजह से लोगों में यह दिक्कत बढ़ रही है. इसके अलावा, अनहेल्दी खानपान और शरीर में पोषक तत्वों की कमी भी इसकी कुछ वजहें हैं. कमर दर्द से राहत पाने के लिए एक्सपर्ट हमेशा एक्सरसाइज करने की सलाह देते हैं. क्योंकि इससे न सिर्फ मसल्स को आराम मिलेगा, बल्कि शरीर के विभिन्न हिस्सों में होने वाले दर्द से भी राहत मिलेगी.

एक्सरसाइज के अलावा, आपको अपने खानपान पर भी खास ध्यान देना होगा और भोजन में उन पोषक तत्वों से भरपूर चीजों को शामिल करना होगा, जो दर्द से राहत प्रदान कर सकते हैं. आज हम आपको कुछ ऐसे खाद्य पदार्थों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको खाने से आपको दर्द से राहत मिल सकती है.

1. ओमेगा–3 फैटी एसिडरू अगर आपको अक्सर कमर में दर्द की परेशानी रहती है तो आपको ओमेगा–3 फैटी एसिड से भरपूर भोजन का सेवन करना चाहिए. आपको बादाम, अखरोट, चिया बीज, अलसी के बीज और मछली का सेवन करना चाहिए. क्योंकि इनमें ओमेगा–3 फैटी एसिड अच्छी खासी मात्रा में पाया जाता है. इसके अलावा, आप खाना बनाने के लिए सरसों के तेल और जैतून के तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं. इससे आपको दर्द से राहत मिल सकती है.

2. एंटी इंफ्लेमेटरी फूडरू दर्द को कम करने में एंटी इंफ्लेमेटरी फूड भी आपकी काफी मदद कर सकते हैं. आपको अपने किचन में ही ऐसे कई मसाले मिल जाएंगे जिनमें एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं, जैसे– दालचीनी, लाल मिर्च और अदरक आदि. इसके अलावा, हल्दी भी एक ऐसा मसाला है, जो जोड़ों के दर्द को कम करने में सहायक हो सकता है.

3. प्रोटीन फूडरू शरीर में प्रोटीन की कमी की वजह से कई बार दर्द की समस्या पैदा हो जाती है. इसलिए अपनी डाइट में प्रोटीन से भरपूर भोजन (अंडे, दूध, दाल आदि) को शामिल करें.

4. हरी सब्जियांरू दर्द से राहत पाने के लिए आप हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन भी कर सकते हैं, जैसे– फूलगोभी, ब्रोकोली, पालक और पत्तागोभी आदि. इनमें विटामिन ए, विटामिन सी और विटामिन के भी कुछ मात्रा में पाया जाता है. इसके अलावा, एक सल्फोराफेन नाम का कंपाउंड भी पाया जाता है, जो दर्द से राहत दिलाने का काम करता है.

5. जड़ वाली सब्जियांरू आप दर्द से राहत पाने के लिए जड़ वाली सब्जियों का सेवन भी कर सकते हैं, जिनमें चुकंदर, गाजर और कद्दू आदि शामिल हैं. इनमें एंटीऑक्सीडेंट भी पाया जाता है, जो दर्द से राहत दिलाने का काम कर सकता है.

6. ताजे फलरू दर्द से राहत पाने के साथ–साथ संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए आपको रोजाना ताजे फलों का भी सेवन करना चाहिए. अपनी डाइट में अनानास, सेब, चेरी, जामुन, खट्टे फल और अंगूर आदि को शामिल कर सकते हैं.

अनन्या पांडे ने फ्लॉन्ट किया कर्वी फिगर, बढ़ाया इंटरनेट का तापमान

अनन्या पांडे इन दिनों अपनी फिल्म ड्रीम गर्ल 2 को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं. एक्ट्रेस जमकर अपनी फिल्म का प्रमोशन कर रही हैं. उनके लेटेस्ट लुक की बात करें तो अनन्या पांडे ने इंस्टाग्राम पर अपना स्टाइलिश और ग्लैमरस लुक शेयर किया है. डेनिम ऑफ शोल्डर टॉप और जींस में अनन्या बेहद ग्लैमरस लग

रही हैं. अनन्या पांडे ने इंस्टाग्राम पर अपना स्टाइलिश लुक शेयर किया है. इंटरनेट पर अनन्या पांडे के इस अवतार को काफी पसंद किया जा रहा है. अनन्या पांडे ने ब्लू कलर की डेनिम ड्रेस में बेहद ग्लैमरस लग रही हैं. अनन्या पांडे ने इस आउटफिट के साथ लाइट मेकअप कैरी किया हुआ है. खुले बालों में अनन्या बेहद बेहद खूबसूरत लग रही हैं. अनन्या पांडे सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं. इंस्टाग्राम अक्सर अपनी बोल्ड फोटो शेयर करती रहती हैं. अनन्या पांडे का इंस्टाग्राम उनकी स्टनिंग और सिजलिंग फोटो से भरा हुआ है. अनन्या पांडे का करियर इन दिनों काफी अच्छा चल रहा है. रिपोर्ट्स के अनुसार अनन्या पांडे को कई बड़ी फिल्मों के लिए ऑफर आ रहे हैं.

गदर 2 बनी सबसे तेज 450 करोड़ कमाने वाली फिल्म, पीछे रह गई पठान और बाहुबली

गदर 2 बॉक्स ऑफिस पर अभी भी धूम मचा रही है। शनिवार को तीसरी सबसे बड़ी हिंदी फिल्म बन चुकी गदर 2 ने संडे को ऐसी कमाई की जिसने एक बार फिर से बॉक्स ऑफिस पर तूफान ला दिया। बड़ी स्क्रीन पर तारा सिंह का पाकिस्तानी एडवेंचर देखने के लिए संडे को एक बार फिर सिनेमाघरों में दर्शकों का ऐसा हुजूम उमड़ा कि गदर 2 ने फिर से एक दिन में रिकॉर्ड तोड़ कारोबार कर डाला। ज्ञातव्य है कि सिनेमाघरों में गदर 2 का तीसरा हफ्ता चल रहा है। 17वें दिन फिल्म ने जो कारोबार किया वो इस शुक्रवार को प्रदर्शित हुई आयुष्मान खुराना की फिल्म ड्रीम गर्ल–2 भी नहीं कर सकी है।

शुक्रवार–शनिवार सॉलिड कमाई के बाद गदर 2 ने संडे को एक बार फिर से बड़ा जंप लिया। शुक्रवार के 7 करोड़ के मुकाबले, शनिवार को फिल्म ने 80त्न से ज्यादा जंप लिया और 13.75 करोड़ रुपये का कारोबार किया। रविवार को गदर 2 की कमाई में एक बार फिर से उछाल आया। शनिवार के मुकाबले 20त्न के करीब जंप के साथ सनी की फिल्म ने रविवार को 16.10 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। रविवार की कमाई के साथ गदर 2 का वीकेंड कलेक्शन 37 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया है। तीसरे वीकेंड में इतनी बेहतरीन कमाई कई बड़ी–बड़ी फिल्मों को नसीब नहीं हुई है। दूसरे वीकेंड में 91 करोड़ रुपये से ज्यादा कमाने वाली इस फिल्म का कलेक्शन, तीसरे वीकेंड में 60त्न से भी कम गिरा है जो बहुत बड़ी बात है। रविवार की कमाई से अब गदर 2 ने बॉक्स ऑफिस पर 450 करोड़ का पहाड़ जैसा माइलस्टोन पार कर लिया है। अब 17 दिन में फिल्म का कुल नेट इंडिया कलेक्शन 456.05 करोड़ रुपये हो गया है। बॉलीवुड के इतिहास में सिर्फ शाहरुख खान की पठान ही अभी तक ये कमाल कर पाई थी, जबकि इस विशाल आंकड़े को पार करने वाली हिंदी फिल्मों में पठान के साथ, एसएस. राजामौली की बाहुबली 2 (हिंदी) भी शामिल है। गदर 2 के खाते में एक बड़ी अचीवमेंट ये भी आई है कि ये सबसे तेज 450 करोड़ कमाने वाली फिल्म बन गई है। जहां शाहरुख की पठान को ये कमाल करने में 18 दिन का समय लगा था, वहीं बाहुबली 2 के हिंदी वर्जन को 450 करोड़ कमाने में 20 दिन लगे थे। गदर 2 से सनी देओल की खाते में ऐसे बड़े–बड़े रिकॉर्ड दर्ज हो रहे हैं, जिन्हें तोडने की कल्पना भी अगस्त 2023 से पहले किसी ने नहीं की होगी। अक्षय कुमार स्टारर फिल्म श्ओएमजी 2च को पहले दिन से ही सनी देओल की श्गदर 2च से क्लैश का सामना करना पड़ा है. हालांकि सामाजिक इश्यू पर बनी इस फिल्म ने भी बॉक्स ऑफिस पर शानदार कारोबार किया है. फिल्म की कमाई में तीसरे हफ्ते काफी गिरावट देखी गई थी लेकिन वीकेंड पर एक बार फिर श्ओएमजी 2च के कलेक्शन में थोड़ उछाल आया. तीसरे शनिवार को जहां श्ओएमजी 2चने 3.15 करोड़ का कलेक्शन किया तो वहीं अब फिल्म की रिलीज के 17वें दिन यानी तीसरे रविवार की कमाई के शुरुआती आंकड़े भी आ गए हैं. रिपोर्ट के मुताबिक श्ओएमजी 2च ने रिलीज के 17वें दिन 3.65 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ श्ओएमजी 2च की 17 दिनों की कुल कमाई अब 135.02 करोड़ रुपये हो गई है. सनी देओल की फिल्म श्गदर 2च की कमाई का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है. यहां तक कि 17वें दिन भी इसने लेटेस्ट रिलीज फिल्म श्ड्रीम गर्ल 2च से ज्यादा कलेक्शन किया है. वहीं श्ओएमजी 2च का तो अब श्गदर 2च के आगे दम निकल चुका है. इसी के साथ श्गदर 2च ने महज 17 दिनों में सबसे तेजी से 450 करोड़ का आंकड़ा पार कर नया कीर्तिमान सेट कर दिया है. इसने पठान का रिकॉर्ड ब्रेक कर दिया है. बता दें कि पठान 18 दिनों में 450 करोड़ के कल्ब में शामिल हुई थी. वहीं अब श्गदर 2च 500 करोड़ क्लब में शामिल होने की ओर बढ़ रही है. फिल्म की कमाई की रफ्तार देखते हुए लग रहा है कि ये जल्द ही इस माइल्स स्टोन को भी पार कर लेगी.

राम पोथिनेनी की स्कंद का ट्रेलर आउट

प्रसिद्ध निर्देशक बोयापति श्रीनु, जो अपनी ब्लॉकबस्टर अखंडा के लिए जाने जाते हैं, स्कंद के साथ वापस आ गए हैं, जिसमें राम पोथिनेनी और श्रीलीला मुख्य भूमिका में हैं। फिल्म ने सिनेप्रेमियों के बीच अपार प्रत्याशा पैदा कर दी है, और निर्माताओं ने हाल ही में नाटकीय ट्रेलर का अनावरण किया है। ट्रेलर बोयापति के ट्रेडमार्क एक्शन दृश्यों और प्रभावशाली संवादों से परिपूर्ण है। राम अपने सामूहिक अवतार में प्रभावशाली ढंग से तेलंगाना भाषा का उच्चारण करते हुए दिखाई देते हैं। ट्रेलर के अंत में राम पोथिनेनी का आश्चर्यजनक परिवर्तन देखा जा सकता है। ऐसा लगता है कि बोयापति ने पारिवारिक भावनाओं के साथ शक्तिशाली कार्रवाई का संयोजन करते हुए अपनी विशिष्ट शैली पेश की है। उत्पादन मूल्य सराहनीय हैं. हालांकि ट्रेलर कथानक का विस्तार से खुलासा नहीं करता है, लेकिन यह बड़े पैमाने पर तत्वों की मजबूत उपस्थिति का संकेत देता है। फिल्म में सई मांजरेकर भी अहम भूमिका में हैं। श्रीनिवास चित्तूरी के पर्याप्त बजट द्वारा समर्थित, श्रीनिवास सिल्वर स्क्रीन बैनर के तहत, स्कंद जी स्टूडियो साउथ और पवन कुमार द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह फिल्म 15 सितंबर को रिलीज होने वाली है।

बहुत तेजी से वजन कम करना चाहते हैं तो इन खतरों को भी जान लीजिए, सेहत पर बहुत खतरनाक हो सकते हैं इसके दुष्प्रभाव

आज के जमाने से वेट लॉस सबसे पॉपुलर शब्द बन गया है. फिट रहने और बैली फैट से छुटकारा पाने के लिए लोग अक्सर

वेट लॉस के नए नए तरीके खोजते रहते हैं. तरह तरह की डाइट, जिमिंग और एक्सरसाइज के जरिए लोग तेजी से वजन कम करके स्लिम दिखना चाहते हैं. हालांकि वजन कम करना अच्छी बात है लेकिन तेजी से वजन करना आपकी सेहत के लिए ही नुकसानदेय साबित हो सकता है. हेल्थ एक्सपर्ट कहते हैं कि हर कोई चाहता है कि चंद दिनों में ही वजन कम हो जाए, बाजार में भी तेजी से वजन कम करने के दावे करने वाले बहुत सारे प्रोडक्ट हैं. लेकिन ये फायदे की बजाय नुकसान भी पहुंचा सकते हैं. चलिए जानते हैं कि तेजी से वजन कम करने पर आपकी हेल्थ पर क्या असर हो सकता है और साथ ही ये भी जानिए कि वजन कम करने का सही फार्मूला क्या है. तेजी से वजन कम करने के होते हैं ये नुकसान : तेजी से वजन कम करने की जद्दोजहद में लोग खाना पीना तक छोड़ देते हैं. जब लोग तेजी से वजन कम करने का कोशिश करते हैं तो पोषण की कमी के चलते शरीर में पानी की कमी बहुत तेजी से होती है. पानी की कमी ज्यादा होने पर मांसपेशियों को नुकसान पहुंचता है और आप जल्द ही बीमार पड़ सकते हैं. इसके अलावा तेजी से वजन कम करने पर मेटाबॉलिज्म पर भी बुरा असर पड़ता है. दरअसल रोज भोजन करने और पचाने की दर का मेटाबॉलिज्म पर असर पड़ता है. अगर तेजी से वजन कम करने के चक्कर में आप कम कैलोरी वाला खाना खाएंगे तो मेटाबॉलिज्म कमजोर हो जाएगा और आपके हार्मोन्स पर भी बुरा असर पड़ेगा. तेजी से वजन कम करने का तीसरा बुरा असर पथरी के रूप में होता है. इससे पित्ताशय में पथरी होने का खतरा बढ़ सकता है. वजन कम करने का क्या है सही तरीकाः हेल्थ एक्सपर्ट कहते हैं कि तेजी से वजन कम करने की बजाय एक सही गति या फिर धीमी गति से वजन कम करना शरीर के लिए फायदेमंद साबित होता है. एक हफ्ते में 400 ग्राम से एक किलो वजन घटाना काफी होता है. यानी आपकी डाइट, एक्सरसाइज और वेट लॉस के अन्य प्रयास इस तरह होने चाहिए कि एक सप्ताह में आप 400 ग्राम से एक किलो वजन घटा सकें. इससे ज्यादा वजन घटाने की कोशिशें आपके शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है.